नवंबर

Spirit Flames Global

Daily News



“लोगों के दिलों में जोश जगाना, राष्ट्रों का रूपांतरण करना और यीशु मसीह के लिए दुनिया पर विजय प्राप्त करना।”

- जीन मेजर
द्वारा

महीने का फसल काटना

गलतियों 6:9

"हमें भलाई करने में थकना नहीं चाहिए, क्योंकि उचित समय पर हमें इसका फल अवश्य मिलेगा, बशर्ते हम हार न मानें।"

विषयसूची

सप्ताह 1

1 नवंबर: फसल काटने का महीना (गलतियों 6:9) 4

2 नवंबर: जो बोओगे नहीं, उससे फसल नहीं काटोगे (गलतियों 6:7) 5

3 नवंबर: तुम बोओगे उससे कहीं अधिक काटोगे (2 कुरिन्थियों 9:6) 6

4 नवंबर: फसल काटने के लिए मजदूरों की आवश्यकता होती है (मत्ती 9:37-38) 7

5 नवंबर: परमेश्वर के राज्य में बहुत काम है (यूहन्ना 4:35) 8

6 नवंबर: सुसमाचार का प्रचार करने के लिए तैयार रहें (2 तिमोथी 4:2) 9

7 नवंबर: आप परमेश्वर के राज्य के लिए क्या कर रहे हैं? (मत्ती 6:33) 10

सप्ताह 2

8 नवंबर: परमेश्वर का राज्य उन लोगों की तलाश में है जो फसल काटने के लिए तैयार हों (यशायाह 6:8) 11

9 नवंबर: वे कीट जो आपकी फसल को नष्ट कर सकते हैं (योएल 2:25) 12

10 नवंबर: तुम फसल के हकदार हो और फिर से बोने की तैयारी करो (उपदेशक 11:6) 13

11 नवंबर: फसल कटाई के दौरान ईश्वर की दिव्य कृपा (भजन संहिता 5:12) 14

12 नवंबर: तनाव और अवसाद से कैसे निपटें (फिलिप्पियों 4:6-7) 15

13 नवंबर: अपनी फसल का अच्छा प्रबंधन अधिक फसल को आकर्षित करता है (लूका 16:10) 16

14 नवंबर: क्या परमेश्वर आप पर बड़े कार्यों के लिए भरोसा कर सकता है? (यूहन्ना 14:12) 17

सप्ताह 3

15 नवंबर: परमेश्वर से कुछ करने के लिए कहने के बजाय, उसे बताएं कि आप क्या करेंगे (याकूब 2:17) 18

16 नवंबर: फसल कटाई के दौरान प्रार्थना (1 थिस्सलनीकियों 5:17) 19

17 नवंबर: फसल कटाई के दौरान गलत लोगों से बचें (1 कुरिन्थियों 15:33) 20

18 नवंबर: परमेश्वर के चमत्कार वास्तविक हैं (यिर्मयाह 32:27) 21

19 नवंबर: दुष्ट आत्माएं आपकी फसल को नष्ट करने पर तुली हैं (यूहन्ना 10:10) 22

20 नवंबर: उपवास कैसे करें (मत्ती 6:16-18) 23

21 नवंबर: ईश्वर का आशीर्वाद बनाम आशीर्वाद (नीतिवचन 10:22) 24

सप्ताह 4

22 नवंबर: जब परमेश्वर आपको दूसरा मौका देता है (विलापगीत 3:22-23) 25

23 नवंबर: असफलताओं से निराश न हों (नीतिवचन 24:16) 26

24 नवंबर: आपके भीतर अपार क्षमता छिपी है, उसका उपयोग करें (इफिसियों 3:20) 27

25 नवंबर: ईश्वर के आपके प्रति प्रेम को याद रखें (रोमियों 8:38-39) 28

26 नवंबर: अपनी फसल बढ़ाने का लक्ष्य रखें (उत्पत्ति 26:12-13) 29

27 नवंबर: शैतान के झूठ पर विश्वास न करो (यूहन्ना 8:44) 30

28 नवंबर: महानता के लिए अपनी कल्पना का उपयोग करें (उत्पत्ति 11:6) 31

सप्ताह 5

29 नवंबर: शैतानी शब्दों को अस्वीकार करो (यशायाह 54:17) 32

30 नवंबर: अपनी फसल की रक्षा कैसे करें (नीतिवचन 4:23) 33

फसल काटने का महीना

गलतियों 6:9
"हमें भलाई करने में थकना नहीं चाहिए, क्योंकि उचित समय पर
हमें इसका फल अवश्य मिलेगा, बशर्ते हम हार न मानें।"

फसल संयोगवश नहीं मिलती; यह बीज, समय और प्रक्रिया का परिणाम है। अनेक विश्वासी फसल की कामना करते हैं, परन्तु कुछ ही समझते हैं कि फसल सिद्धांतों का पालन करती है। परमेश्वर ने जीवन को इस प्रकार रचा है कि जो बोया जाता है, अंततः फल अवश्य प्राप्त होता है। यह महीना हमें याद दिलाता है कि आपके अतीत के बीज, चाहे वे आध्यात्मिक हों, आर्थिक हों या व्यक्तिगत, सतह के नीचे फल दे रहे हैं। फसल का मौसम केवल प्राप्त करने के बारे में नहीं है; यह उस प्रक्रिया को पहचानने के बारे में है जो आपको यहाँ तक लाई है और आगे आने वाली चुनौतियों के लिए तैयारी करने के बारे में है।

फसल कटाई के मौसम को समझना

1. फसल निरंतर बोने का परिणाम है। बिना बीज के कुछ भी नहीं उगता, और आपके जीवन में कुछ भी बिना किसी कारण के प्रकट नहीं होता। आपका हर कार्य, हर शब्द और हर निर्णय आपके भविष्य में बोए गए बीज के समान है। समय के साथ, ये बीज जड़ पकड़ लेते हैं और प्रत्यक्ष परिणाम देते हैं, चाहे आपने ऐसा चाहा हो या नहीं।

2. फसल नियत समय पर आती है। ईश्वर ऋतुओं के अनुसार कार्य करता है, और प्रत्येक बीज का अपना नियत समय होता है जब वह अंकुरित होता है। तत्काल परिणाम न दिखने का अर्थ यह नहीं है कि कुछ भी नहीं हो रहा है। वृद्धि अक्सर चुपचाप होती है, दृश्य रूप में प्रकट होने से बहुत पहले।

3. फसल मिलने से पहले ही हार न मानें। कई लोग ठीक उसी समय हार मान लेते हैं जब उनकी फसल कटाई के सबसे करीब होती है, क्योंकि प्रतीक्षा असहनीय हो जाती है। सफलता मिलने से ठीक पहले थकान अक्सर बढ़ जाती है। दृढ़ता आवश्यक है, क्योंकि जो लोग हार नहीं मानते, वही अंततः अपनी फसल प्राप्त करते हैं।

4. फसल से पता चलता है कि वास्तव में क्या बोया गया था। आपको जो परिणाम मिलेगा, वह हमेशा बोए गए बीज की वास्तविक प्रकृति को दर्शाएगा, चाहे वह जानबूझकर बोया गया हो या नहीं। विश्वास, लगन और आज्ञाकारिता से बोए गए अच्छे बीज अच्छी फसल देते हैं, जबकि लापरवाही से बोए गए बीज वैसे ही परिणाम देते हैं। फसल का मौसम आत्म-चिंतन का मौसम है।

5. फसल के लिए तत्परता आवश्यक है। आपको आने वाली हर चीज को संभालने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि बिना तैयारी के प्राप्त फसल को उसी आसानी से कुप्रबंधित किया जा सकता है, जिस आसानी से उसे विश्वास के माध्यम से प्राप्त किया गया था। तत्परता का अर्थ है ज्ञान, अनुशासन और व्यवस्थित ढांचा होना ताकि आप वृद्धि को बिना अभिभूत हुए प्राप्त कर सकें। बहुत से लोग ऐसी फसल के लिए प्रार्थना करते हैं जिसे संभालने की क्षमता उनमें अभी तक विकसित नहीं हुई है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं फसल काटने के मौसम में प्रवेश कर रहा हूँ, और मैं अपने बीजों के फल को बुद्धिमत्ता और तत्परता के साथ ग्रहण करता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मैंने जो बीज बोए हैं, उनके लिए आपका धन्यवाद। फसल काटने के इस समय में मुझे धैर्यवान और तैयार रहने में सहायता कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



2 नवंबर

आप बिना बोए फसल नहीं काट सकते।

गलतियों 6:7
"धोखा मत खाओ: ईश्वर का उपहास नहीं किया जा सकता। मनुष्य जैसा बोता है वैसा ही काटता है।"

प्राकृतिक और आध्यात्मिक दोनों क्षेत्रों में सबसे अटल नियमों में से एक है बोने और काटने का नियम। बहुत से लोग फसल की कामना करते हैं—सफलता, तरक्की, जीविका, प्रभाव—लेकिन वे उस प्रक्रिया को अनदेखा कर देते हैं जो इसे उत्पन्न करती है। फसल केवल इच्छा से नहीं मिलती; यह बीज से मिलती है। यदि कुछ बोया ही नहीं जाएगा, तो कुछ उगेगा भी नहीं। यह सिद्धांत दंड नहीं है—यह एक संरचना है। ईश्वर ने जीवन को इस प्रकार बनाया है कि फल आपके कर्मों का फल है। आप जो लगातार बोते हैं, अंततः वही फल पाते हैं।

बोने और काटने के नियम को समझना

1. हर परिणाम एक बीज का प्रतिबिंब है। आपके जीवन में कुछ भी बिना कारण के प्रकट नहीं होता। आपकी आदतें, निर्णय, शब्द और कर्म बीज हैं। समय के साथ, वे प्रत्यक्ष परिणाम उत्पन्न करते हैं। यदि आप अपने जीवन का ईमानदारी से विश्लेषण करेंगे, तो आप पाएंगे कि आपकी वर्तमान स्थिति अतीत में बोए गए बीजों का परिणाम है—चाहे सचेत रूप से बोए गए हों या अचेतन रूप से।

2. केवल इच्छा से सफलता नहीं मिलती। बहुत से लोग सफलता के लिए प्रार्थना तो करते हैं, लेकिन उसे साकार करने के लिए कोई कदम नहीं उठाते। प्रार्थना शक्तिशाली होती है, लेकिन उसे कर्म के साथ जोड़ना आवश्यक है। यदि आप विकास चाहते हैं, तो आपको सही बीज बोने होंगे—अनुशासन, सीखना, प्रयास और निरंतरता।

3. बुवाई के लिए उद्देश्य और दिशा आवश्यक है। सभी बीज एक जैसे परिणाम नहीं देते। आपको यह सोच-समझकर बोना होगा कि आप क्या बो रहे हैं। यदि आप अपना समय भटकावों में लगाते हैं, तो आपकी क्षमता व्यर्थ जाएगी। यदि आप अपना समय विकास में लगाते हैं, तो आपको प्रगति मिलेगी।

4. बीज बोना आध्यात्मिक और व्यावहारिक दोनों है। दान, प्रार्थना और सेवा आध्यात्मिक बीज हैं, लेकिन काम, योजना और अनुशासन भी उतने ही महत्वपूर्ण हैं। एक संपूर्ण जीवन के लिए दोनों आवश्यक हैं। किसी एक पक्ष की उपेक्षा करने से असंतुलन उत्पन्न होता है।

5. परिवर्तन की कुंजी है जिम्मेदारी। यदि आप बेहतर परिणाम चाहते हैं, तो आपको अपने बीज बोने का तरीका बदलना होगा। इसके लिए ईमानदारी आवश्यक है। दूसरों को दोष देने से परिणाम नहीं बदलेंगे—अपने कार्यों में बदलाव लाने से ही परिणाम बदलेंगे।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं लगातार सही बीज बोता हूं, और मेरा जीवन विकास, वृद्धि और उद्देश्य से भरा हुआ है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे बीज बोने की शक्ति को समझने में सहायता कीजिए। मुझे सही बीज सजगता और अनुशासन के साथ बोना सिखाइए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



3 नवंबर

आप बोए गए बीज से अधिक काटेंगे।

2 कुरिन्थियों 9:6
जो कम बोएगा, वह कम ही काटेगा, और जो उदारता से बोएगा, वह उदारता से ही काटेगा।

ईश्वर की फसल प्रणाली समानता पर आधारित नहीं है; यह गुणन पर आधारित है। एक बीज से एक ही फल नहीं मिलता; बल्कि अनेक फल मिलते हैं। यही है बीज बोने की शक्ति। जब आप एक बीज बोते हैं, तो आप एक परिणाम के लिए नहीं बो रहे होते; आप गुणन के लिए बो रहे होते हैं। इसीलिए आपका बीज बोना सोच-समझकर किया जाना चाहिए। जो आप बोते हैं, वह अपने मूल रूप से कहीं अधिक बढ़ता है।

गुणन के सिद्धांत को समझना

1. प्रत्येक बीज अपने आप से कहीं अधिक गुणन करता है। एक बीज में सतह पर दिखाई देने वाली क्षमता से कहीं अधिक क्षमता होती है, जिसमें स्वयं को कई गुना पुनरुत्पादित करने की क्षमता निहित होती है। एक बीज अनेक बीज उत्पन्न कर सकता है, और वे बीज बदले में एक पूरी फसल पैदा कर सकते हैं। ठीक इसी प्रकार, आपके कार्यों और निर्णयों का प्रभाव भी कई गुना बढ़ जाता है, जो अक्सर आपके मूल इरादे से कहीं अधिक होता है।

2. छोटे बीजों को कभी भी तुच्छ नहीं समझना चाहिए। बहुत से लोग छोटी शुरुआत को नज़रअंदाज़ कर देते हैं क्योंकि वे महत्वहीन लगती हैं। लेकिन धैर्य और निरंतरता के साथ पोषित किए जाने पर, छोटे बीज बड़े परिणाम देते हैं जो अक्सर उन्हें बोने वाले को भी आश्चर्यचकित कर देते हैं। छोटे, साधारण कार्यों में निरंतरता ही अंततः महत्वपूर्ण परिणामों की ओर ले जाती है।

3. उदारतापूर्वक बोने से भरपूर फसल मिलती है। आपके बोने की मात्रा सीधे तौर पर आपकी फसल की मात्रा को प्रभावित करती है, क्योंकि ईश्वर की व्यवस्था केवल सावधानी से नहीं बल्कि उदारता से काम लेती है। यह सिद्धांत समय, प्रयास, धन और सेवा पर लागू होता है। कम बोने से कम फसल मिलती है, जबकि उदारतापूर्वक बोने से भरपूर वृद्धि होती है।

4. गुणन के लिए धैर्य आवश्यक है। वृद्धि में समय लगता है, और गुणन शायद ही कभी उतनी जल्दी होता है जितनी जल्दी बीज बोने वाला चाहता है। आपको तुरंत परिणाम नहीं दिखेंगे, लेकिन प्रक्रिया अभी भी अंदर ही अंदर चल रही है। धैर्य गुणन प्रक्रिया को अपना पूरा रूप धारण करने देता है।

5. विकास की अपेक्षा रखें, ठहराव की नहीं। एक विश्वासी को सीमित मानसिकता के साथ नहीं जीना चाहिए, यह सोचकर नहीं जीना चाहिए कि चीजें हमेशा एक जैसी रहेंगी या सिकुड़ती रहेंगी। परमेश्वर की व्यवस्था वृद्धि के लिए बनी है, ठहराव के लिए नहीं, और यह सत्य आपके प्रार्थना करने, योजना बनाने और कर्म करने के तरीके को निर्देशित करना चाहिए। ठहराव अक्सर प्राकृतिक परिस्थितियों में प्रकट होने से बहुत पहले मन में ही शुरू हो जाता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मेरे बीज बढ़ते हैं, और मेरे जीवन के हर क्षेत्र में वृद्धि होती है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, उदारतापूर्वक और निष्ठापूर्वक बीज बोने में मेरी सहायता कीजिए। मेरा जीवन आपके गुणन के सिद्धांत को प्रतिबिंबित करे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



4 नवंबर

फसल काटने के लिए मजदूरों की आवश्यकता होती है

मत्ती 9:37–38
"फसल तो बहुत है, पर मजदूर कम हैं; इसलिए फसल के स्वामी से प्रार्थना करो कि वह अपनी फसल में काम करने के लिए मजदूर भेजे।"

फसल अपने आप नहीं कटती। खेत तैयार होने पर भी, उसे तैयार करने के लिए मजदूरों की जरूरत होती है, जो सही समय को पहचानें और काम करें। कई विश्वासी अच्छे परिणाम, विकास और प्रभाव के लिए प्रार्थना तो करते हैं, लेकिन मेहनत करने को तैयार नहीं होते। आध्यात्मिक और प्राकृतिक दोनों क्षेत्रों में, फसल काटने के लिए भागीदारी आवश्यक है। ईश्वर अवसर तो प्रदान कर सकते हैं, लेकिन वे भागीदारी की अपेक्षा रखते हैं। त्रासदी यह नहीं है कि फसल नहीं है—त्रासदी यह है कि काम करने के लिए पर्याप्त लोग तैयार नहीं हैं।

फसल कटाई के लिए मजदूरों की आवश्यकता क्यों होती है, इसे समझना

1. फसल की कटाई सोच-समझकर करनी चाहिए। फसल तैयार होने पर वह अपने आप भंडार में नहीं जाती। उसे इकट्ठा करने के लिए किसी को प्रयास करना पड़ता है। ठीक उसी तरह, अवसरों को पहचानकर उन पर अमल करना आवश्यक है। यदि उन्हें अनदेखा किया जाए, तो वे हाथ से निकल सकते हैं और खो सकते हैं।

2. श्रम में प्रयास, अनुशासन और त्याग की आवश्यकता होती है। फसल कटाई का काम आकस्मिक नहीं होता—यह सोच-समझकर किया जाता है। इसमें समय, ऊर्जा और एकाग्रता की आवश्यकता होती है। परिणाम चाहने वाले व्यक्ति को आवश्यक प्रयास करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

3. अवसर प्रचुर मात्रा में हैं, लेकिन कर्म दुर्लभ हैं। यीशु ने कहा कि फसल प्रचुर मात्रा में है, जिसका अर्थ है कि अवसर समस्या नहीं है। चुनौती है इच्छाशक्ति की। बहुत से लोग अवसर देखते हैं लेकिन कर्म नहीं करते।

4. श्रम ईश्वर के साथ साझेदारी है। ईश्वर खेत, बीज और फसल प्रदान करता है—परन्तु फसल काटने के लिए वह मनुष्यों का उपयोग करता है। यह साझेदारी आवश्यक है। आप इस प्रक्रिया का हिस्सा हैं।

5. फसल काटने में आपकी भूमिका मायने रखती है। हर विश्वासी की एक भूमिका होती है। चाहे सेवा, दान, उपदेश या निर्माण के माध्यम से हो, आपका योगदान परिणाम को प्रभावित करता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं ईश्वर की फसल में स्वेच्छा से काम करने वाला मजदूर हूँ। मैं अनुशासन, उद्देश्य और तत्परता के साथ कार्य करता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे अपनी फसल में एक श्रमिक बनाइए। अवसरों को पहचानने और साहस एवं अनुशासन के साथ कार्य करने में मेरी सहायता कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



05 नवंबर

परमेश्वर के राज्य में बहुत काम है।

यूहन्ना 4:35
"अपनी आँखें ऊपर उठाओ और खेतों को देखो, क्योंकि वे कटाई के लिए पहले से ही तैयार हैं।"

परमेश्वर का राज्य सक्रिय, बढ़ता और फैलता हुआ है। इसमें हमेशा कुछ न कुछ काम करने को रहता है। कई विश्वासी इस राज्य को निष्क्रिय मानते हैं, लेकिन पवित्रशास्त्र निरंतर गति को प्रकट करता है: जीवन रूपांतरित हो रहे हैं, व्यवस्थाएँ बनाई जा रही हैं और लोगों तक संदेश पहुँचाया जा रहा है। मुद्दा यह नहीं है कि काम है या नहीं; मुद्दा यह है कि क्या विश्वासी उसमें भाग लेने के लिए तैयार हैं।

राज्य के कार्यों को समझना

1. परमेश्वर के राज्य का कार्य निरंतर चलता रहता है। ऐसा कोई समय नहीं होता जब परमेश्वर का कार्य रुक जाए, भले ही मानवीय दृष्टिकोण से यह शांत प्रतीत हो। आपके आस-पास हमेशा ऐसे लोग होते हैं जिनके जीवन को प्रभावित करना होता है, सेवा करने के अवसर होते हैं और ज़रूरतें पूरी करनी होती हैं। परमेश्वर का राज्य निरंतर गति पर चलता है, सुविधा पर नहीं।

2. अवसर हर जगह मौजूद हैं। बहुत से लोग सेवा करने के अवसरों को इसलिए खो देते हैं क्योंकि वे अपने आसपास हो रही घटनाओं पर ध्यान नहीं देते। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि वे अपनी आँखें ऊपर उठाएँ और खेतों को देखें, जिसका अर्थ है कि केवल इच्छा ही नहीं, बल्कि जागरूकता भी आवश्यक है। प्रोत्साहन देने, दान देने या सेवा करने के अवसर अक्सर सामान्य क्षणों में प्रकट होते हैं जिन्हें आसानी से अनदेखा किया जा सकता है।

3. विश्वासियों के बीच उत्तरदायित्व साझा किया जाता है। परमेश्वर के राज्य का कार्य कुछ चुनिंदा प्रतिभाशाली व्यक्तियों या पादरियों के लिए आरक्षित नहीं है; यह उद्धार प्राप्त करने वाले प्रत्येक विश्वासी का है। हर किसी की एक भूमिका होती है, चाहे वह भूमिका प्रत्यक्ष हो या अप्रत्यक्ष। कोई भी विश्वासी भागीदारी से मुक्त नहीं है, सिर्फ इसलिए कि उसका योगदान साधारण लगता है।

4. प्रभाव के लिए प्रयास और दृढ़ संकल्प आवश्यक हैं। कोई भी सार्थक कार्य संयोग से नहीं होता; प्रभाव लगभग हमेशा समय के साथ निरंतर किए गए सुनियोजित प्रयासों का परिणाम होता है। आपको सही परिस्थितियों की प्रतीक्षा करने के बजाय, यह सोच-समझकर तय करना होगा कि आप कैसे, कहाँ और कब सेवा करेंगे। उस प्रयास के बिना, अच्छे इरादे भी अधूरे रह जाते हैं।

5. आपको सहभागिता करने के लिए बुलाया गया है, न कि केवल देखने के लिए। ईसाई धर्म एक निष्क्रिय धर्म नहीं है जो सुरक्षित दूरी से दूसरों को काम करते हुए देखने पर आधारित हो। आपको केवल पृथ्वी पर ईश्वर के कार्यों को देखने के लिए नहीं बुलाया गया है; आपको कार्य करने और जो कुछ भी आपको दिया गया है उसमें योगदान देने के लिए बुलाया गया है। ईश्वर का राज्य उन विश्वासियों के माध्यम से आगे बढ़ता है जो पीछे हटने के बजाय सक्रिय रूप से भाग लेने का चुनाव करते हैं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं ईश्वर के राज्य में सक्रिय हूं, और मैं अपनी भूमिका को लगन और उद्देश्यपूर्ण ढंग से निभाता हूं।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरे आस-पास के कार्यों को देखने के लिए मेरी आँखें खोल दीजिए। मुझे सक्रिय, सजग और आपके राज्य के प्रति समर्पित होने में सहायता कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



6 नवंबर

सुसमाचार का प्रचार करने के लिए तैयार रहें

2 तीमुथियुस 4:2
"वचन का प्रचार करो; समय हो या न हो, तैयार रहो..."

तत्परता परिपक्वता की निशानी है। विश्वासी को केवल तभी प्रचार करने के लिए नहीं बुलाया गया है जब यह सुविधाजनक, सहज या अपेक्षित हो। निर्देश यह है कि वह हर समय तैयार रहे। यह तत्परता केवल बोलने तक सीमित नहीं है; यह आध्यात्मिक रूप से तैयार रहने, मानसिक रूप से सुसज्जित होने और अवसर मिलने पर सत्य को साझा करने के लिए भावनात्मक रूप से तत्पर रहने से संबंधित है।

प्रचार करने की तत्परता को समझना

1. तत्परता के लिए तैयारी आवश्यक है। आप दूसरों को वह नहीं दे सकते जो आपके पास स्वयं नहीं है, इसीलिए प्रचार करने का अवसर मिलने से बहुत पहले ही तत्परता शुरू हो जाती है। तैयार रहने के लिए, आपको वचन में, प्रार्थना में और व्यक्तिगत आध्यात्मिक विकास में निरंतर समय देना होगा। आपकी तैयारी की गहराई आपके भाषण की स्पष्टता में झलकती है।

2. आपको संदेश को स्पष्ट रूप से समझना चाहिए। स्पष्टता से आत्मविश्वास उत्पन्न होता है, और आत्मविश्वास ही वह शक्ति है जो सुसमाचार को बिना किसी संकोच के संप्रेषित करने में सक्षम बनाती है। जब आप स्वयं सुसमाचार को समझ लेते हैं, तो आप इसे दूसरों तक प्रभावी ढंग से पहुंचा सकते हैं, चाहे उनकी पृष्ठभूमि या प्रश्न कुछ भी हों। संदेश की स्पष्ट समझ होने से बोलने का समय आने पर अनिश्चितता दूर हो जाती है।

3. भय पर विजय प्राप्त करना आवश्यक है। कई विश्वासी डर के कारण प्रचार करने में संकोच करते हैं: अस्वीकृति, शर्मिंदगी या गलत बात कह देने का डर। लेकिन तत्परता के लिए साहस आवश्यक है, क्योंकि सुसमाचार का प्रचार कभी भी कायरता के भाव से नहीं किया जाना चाहिए। साहस का अर्थ भयहीन होना नहीं है; इसका अर्थ है भय के बावजूद आज्ञाकारिता का चुनाव करना।

4. अवसरों को पहचानना और उनका उपयोग करना आवश्यक है। सुसमाचार साझा करने के क्षण अक्सर अप्रत्याशित रूप से आते हैं, ऐसी बातचीत या मुलाकातों में जो पहले से नियोजित नहीं होतीं। एक जागरूक विश्वासी अधिक सुविधाजनक अवसर की प्रतीक्षा करने के बजाय तुरंत प्रतिक्रिया देता है। संकोच का अर्थ अक्सर यह होता है कि अवसर हाथ से निकल जाता है और शायद फिर कभी न मिले।

5. निरंतरता से आत्मविश्वास बढ़ता है: आप जितना अधिक अपने विश्वास को साझा करने का अभ्यास करेंगे, चाहे छोटे-छोटे तरीकों से ही क्यों न हो, समय के साथ यह उतना ही अधिक आत्मविश्वासपूर्ण और स्वाभाविक होता जाएगा। अभ्यास से तत्परता बढ़ती है, ठीक वैसे ही जैसे कोई कौशल बार-बार अभ्यास करने से बेहतर होता है। निरंतरता कभी-कभार के साहस को स्थायी तत्परता में बदल देती है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं हर समय साहस और स्पष्टता के साथ सुसमाचार का प्रचार करने के लिए तैयार हूं।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे आपका वचन साझा करने के लिए तैयार कीजिए। भय दूर कीजिए और मुझे साहस और बुद्धि प्रदान कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



7 नवंबर

आप ईश्वर के राज्य के लिए क्या कर रहे हैं?

मत्ती 6:33
"सर्वप्रथम परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो..."

उद्देश्य केवल इरादे से ही प्रकट नहीं होता; यह कर्मों से प्रकट होता है। कई विश्वासी कहते हैं कि वे ईश्वर के राज्य की परवाह करते हैं, लेकिन उनके दैनिक कार्य इसे प्रतिबिंबित नहीं करते। यह प्रश्न निंदा करने के लिए नहीं है; बल्कि जागरूकता पैदा करने के लिए है। आप अपने समय, ऊर्जा और संसाधनों का उपयोग कैसे करते हैं, यह आपकी प्राथमिकताओं को दर्शाता है।

राज्य की जिम्मेदारी को समझना

1. हर विश्वासी की एक भूमिका होती है। कोई भी व्यक्ति उद्देश्यहीन नहीं है, चाहे उसका जीवन या क्षमताएँ कितनी भी साधारण क्यों न लगें। आपके उपहार, कौशल और अवसर आपको केवल व्यक्तिगत लाभ के लिए नहीं दिए गए हैं; इनका उद्देश्य परमेश्वर के राज्य की सेवा करना है। जब आप यह पहचान लेते हैं कि आपकी भूमिका महत्वपूर्ण है, तो आप अपने पास मौजूद संसाधनों का उपयोग करना शुरू कर देते हैं।

2. समय आपके सबसे बड़े संसाधनों में से एक है। आप अपना समय कैसे व्यतीत करते हैं, यह इस बात को कहीं अधिक सटीक रूप से दर्शाता है कि आप वास्तव में किन मूल्यों को महत्व देते हैं, बजाय इसके कि आप क्या कहते हैं कि आप किन मूल्यों को महत्व देते हैं। ईश्वर के राज्य में सेवा, दान या प्रार्थना के माध्यम से लगाया गया समय, एक ऐसा शाश्वत प्रभाव उत्पन्न करता है जो किसी भी क्षणिक चीज़ से कहीं अधिक समय तक रहता है। बहुत से लोग दावा करते हैं कि ईश्वर का राज्य उनके लिए महत्वपूर्ण है, जबकि वे इसे अपने समय का सबसे कम हिस्सा देते हैं।

3. विकास के लिए योगदान आवश्यक है। व्यक्तिगत और कॉर्पोरेट दोनों ही तरह का विकास, इसमें शामिल लोगों के योगदान के बिना संभव नहीं है। यदि आप अपने जीवन में ईश्वरीय फल देखना चाहते हैं, तो आपको केवल अपनी मंशा ही नहीं, बल्कि अपना प्रयास और संसाधन भी देने होंगे। केवल मंशा से कभी कुछ नहीं बनता; यह योगदान ही है जो इच्छा को प्रत्यक्ष प्रगति में बदलता है।

4. जवाबदेही वास्तविक है। एक दिन आपको अपने जीवन और समय के सदुपयोग का हिसाब देना होगा। इससे आपको अभी से ही सार्थक जीवन जीने की प्रेरणा मिलनी चाहिए, न कि इस सोच के साथ कि भविष्य में हमेशा अधिक समय होगा। जवाबदेही का उद्देश्य भय उत्पन्न करना नहीं है, बल्कि यह समझना है कि आपके निर्णय मायने रखते हैं।

5. कर्म से परिणाम मिलते हैं। अपने उद्देश्य के बारे में सोचना ही काफी नहीं है; आपको अपने द्वारा खोजे गए उद्देश्य पर अमल भी करना होगा। जो परिकल्पना कर्म में परिवर्तित नहीं होती, वह एक विचार मात्र बनकर रह जाती है, न कि एक प्रमाण। जो विश्वासी निरंतर कर्म करता है, चाहे छोटे-छोटे कदम ही क्यों न हों, वह केवल योजना बनाने वाले से हमेशा आगे निकल जाता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं सक्रिय रूप से ईश्वर के राज्य की सेवा करता हूं, और मेरा जीवन उद्देश्य और योगदान को दर्शाता है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे उद्देश्यपूर्ण जीवन जीने में सहायता कीजिए। मेरे कर्म आपके राज्य के प्रति मेरी प्रतिबद्धता को प्रतिबिंबित करें। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



8 नवंबर

ईश्वर का राज्य उन लोगों की तलाश में है जो फसल काटने के लिए तैयार हों।

यशायाह 6:8
तब मैंने प्रभु की वाणी सुनी, "मैं किसे भेजूँ? और हमारे लिए कौन जाएगा?" मैंने कहा, "मैं यहाँ हूँ। मुझे भेजिए!"

ईश्वर शक्ति से सीमित नहीं हैं—वे उपलब्धता से सीमित हैं। फसल तैयार है, खेत तैयार हैं, आवश्यकता बहुत अधिक है, लेकिन स्वर्ग पात्र खोज रहा है। प्रश्न यह नहीं है कि ईश्वर कार्य करना चाहते हैं या नहीं—प्रश्न यह है कि क्या आप उपयोग होने के लिए तैयार हैं। बहुत से लोग उद्देश्य की इच्छा रखते हैं, लेकिन कुछ ही इसके लिए तैयारी करते हैं। तत्परता ही उन लोगों को अलग करती है जो प्रभाव की बात करते हैं और जो वास्तव में प्रभाव उत्पन्न करते हैं।

फसल कटाई के लिए तैयार होने का अर्थ समझना

1. तत्परता योग्यता से नहीं, इच्छाशक्ति से शुरू होती है। ईश्वर सबसे पहले सबसे कुशल व्यक्ति की तलाश नहीं करते—वे सबसे इच्छुक व्यक्ति की तलाश करते हैं। यशायाह ने अपनी योग्यताओं का परिचय नहीं दिया; उन्होंने अपनी उपलब्धता का परिचय दिया। बहुत से लोग खुद को अयोग्य मान लेते हैं क्योंकि वे खुद को तैयार नहीं समझते, लेकिन ईश्वर उन्हीं के साथ काम करते हैं जो हाँ कहते हैं। इच्छाशक्ति तैयारी का द्वार खोलती है।

2. तैयारी ही प्रभावशीलता निर्धारित करती है। इच्छाशक्ति से अवसर तो मिलते हैं, लेकिन तैयारी ही आपके प्रभाव को निर्धारित करती है। जो व्यक्ति उपलब्ध तो है, पर तैयार नहीं है, उसे परिणाम बनाए रखने में कठिनाई होगी। तैयारी में आध्यात्मिक विकास, बाइबल का ज्ञान, अनुशासन और प्रभावी ढंग से संवाद करने और सेवा करने की क्षमता विकसित करना शामिल है।

3. आज्ञापालन से कार्य प्राप्ति की प्रेरणा मिलती है। ईश्वर के निर्देश अक्सर सरल होते हैं, लेकिन उनमें आज्ञापालन आवश्यक होता है। जब आप शीघ्रता और निरंतरता से प्रतिक्रिया करते हैं, तो आप स्वयं को अधिक जिम्मेदारी के लिए तैयार करते हैं। विलंबित आज्ञापालन अवसरों को खोने का कारण बन सकता है।

4. उपलब्धता जिम्मेदारी को आकर्षित करती है। जो लोग निरंतर उपलब्ध रहते हैं, उन्हीं पर भरोसा किया जाता है। जब आप सेवा करने, सीखने और आगे बढ़ने के लिए खुद को उपलब्ध कराते हैं, तो अवसर आपके पास आने लगते हैं। ईश्वर उन्हीं को काम सौंपता है जो हमेशा मौजूद रहते हैं।

5. प्रतिबद्धता ही सफलता की कुंजी है। शुरुआत करना आसान है, लेकिन जारी रखना मुश्किल। कई लोग उत्साह से शुरू करते हैं, लेकिन निरंतरता खो देते हैं। सच्ची तत्परता में धैर्य शामिल होता है। आपको कठिन, अनपेक्षित या असुविधाजनक परिस्थितियों में भी प्रतिबद्ध रहना होगा।

6. तत्परता के लिए ध्यान भटकाने वाली चीजों से दूर रहना आवश्यक है। यदि आपका जीवन ध्यान भटकाने वाली चीजों से भरा है, तो आप फसल काटने के लिए तैयार नहीं हो सकते। समय, ध्यान और ऊर्जा को उद्देश्य के अनुरूप होना चाहिए। विकास में बाधा डालने वाली किसी भी चीज का समाधान करना होगा।

7. आपको स्वयं को केवल दर्शक नहीं, बल्कि एक माध्यम समझना चाहिए। कई विश्वासी दूसरों को परमेश्वर का कार्य करते हुए देखते हैं, लेकिन आपको केवल देखने के लिए नहीं, बल्कि उसमें भाग लेने के लिए बुलाया गया है। जब आप स्वयं को एक माध्यम समझते हैं, तो आपकी सोच निष्क्रिय से सक्रिय हो जाती है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं तैयार, इच्छुक और सज्जित हूँ। मैं स्वयं को ईश्वर के कार्य के लिए समर्पित करता हूँ, और अनुशासन और आज्ञाकारिता के साथ कार्य करता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे अपने कार्य के लिए तैयार कीजिए। हर बाधा और बंधन को दूर कीजिए। मुझे तैयार, तत्पर और आज्ञाकारी बनने में सहायता कीजिए ताकि मैं अपना कर्तव्य पूरा कर सकूँ। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



9 नवंबर

वे कीट जो आपकी फसल को नष्ट कर सकते हैं

योएल 2:25
मैं तुम्हें वे वर्ष लौटा दूँगा जो टिड्डियों ने खा लिए हैं...

हर तरह का नुकसान अचानक नहीं होता—ज़्यादातर नुकसान धीरे-धीरे होता है। जिस तरह फसलें कीटों से नष्ट हो सकती हैं, उसी तरह छोटी-छोटी अनदेखी समस्याओं से भी आपकी फसल प्रभावित हो सकती है। ये "कीट" अक्सर आदतें, ध्यान भटकाने वाली चीज़ें और ऐसे तौर-तरीके होते हैं जो शुरू में तो मामूली लगते हैं, लेकिन समय के साथ विनाशकारी बन जाते हैं। अगर इन्हें पहचान कर दूर न किया जाए, तो ये धीरे-धीरे आपकी मेहनत से बनाई गई हर चीज़ को नष्ट कर सकते हैं।

यह समझना कि आपकी फसल को क्या नष्ट करता है

1. ध्यान और समय को भटकाने वाली चीज़ें: आपकी फसल के लिए सबसे खतरनाक खतरों में से एक है ध्यान भटकना। अनुत्पादक गतिविधियों में बिताया गया समय धीरे-धीरे आपकी विकास क्षमता को कम कर देता है। ध्यान भटकना सूक्ष्म होता है—यह तुरंत हानिकारक नहीं लगता, लेकिन समय के साथ यह आपकी प्रगति को कमजोर कर देता है।

2. अनुशासन और निरंतरता का अभाव: अनुशासन के बिना, अच्छी शुरुआत भी विफल हो सकती है। अनियमितता विकास में बाधा डालती है। जिस चीज को बनाए नहीं रखा जाता, वह अंततः पतन की ओर अग्रसर होती है। अनुशासन ही आपकी प्रगति की रक्षा करता है।

3. गलत आदतें जो परिणामों को प्रभावित करती हैं: आदतें ही परिणामों को निर्धारित करती हैं। नकारात्मक आदतें—जैसे कि काम टालना, अत्यधिक खर्च करना या नियमित दिनचर्या का अभाव—चुपचाप आपके परिणामों को नष्ट कर सकती हैं। इन आदतों को सोच-समझकर किए गए, सकारात्मक व्यवहारों से बदलना आवश्यक है।

4. संसाधनों का कुप्रबंधन: कुप्रबंधन किसी भी फसल को बर्बाद करने का सबसे तेज़ तरीका है। चाहे वह पैसा हो, समय हो या अवसर, कुप्रबंधन से बर्बादी होती है। जिसका बुद्धिमानी से प्रबंधन नहीं किया जाता, वह टिकता नहीं है।

5. जिन चीजों पर ध्यान देना आवश्यक है, उनकी उपेक्षा करना: जिस भी चीज को नजरअंदाज किया जाता है, वह अंततः बिगड़ जाती है। रिश्ते, वित्त, कौशल और आध्यात्मिक विकास, सभी को ध्यान देने की आवश्यकता होती है। उपेक्षा करने से गिरावट शुरू हो जाती है।

6. गलत प्रभाव और संगति: आपके आसपास के लोग आपकी फसल की रक्षा या उसे नुकसान पहुंचा सकते हैं। नकारात्मक प्रभाव संदेह, ध्यान भटकाव और गलत निर्णय को जन्म दे सकते हैं।

7. आध्यात्मिक उपेक्षा सुरक्षा को कमजोर करती है। एक कमजोर आध्यात्मिक जीवन आपकी फसल को असुरक्षित छोड़ देता है। प्रार्थना, ईश्वर का वचन और आध्यात्मिक जागरूकता सुरक्षा के लिए आवश्यक हैं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं अनुशासन, एकाग्रता और बुद्धिमत्ता से अपनी फसल की रक्षा करता हूँ। मैंने जो कुछ भी बनाया है, उसे कोई नष्ट नहीं कर सकता।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरी फसल को नष्ट करने वाली हर चीज को प्रकट कीजिए। मुझे अपने सभी कार्यों में अनुशासित, एकाग्र और बुद्धिमान बने रहने में सहायता कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



10 नवंबर

आप फसल के हकदार हैं और फिर से बीज बोने के लिए तैयार हो जाइए।

सभोपदेशक 11:6
"सुबह बीज बोओ, और शाम को अपने हाथों को खाली मत छोड़ो..."

फसल कटाई अंत नहीं है; यह एक चक्र का हिस्सा है। कई लोग सफलता के मुकाम तक पहुंचने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं, लेकिन जब वे वहां पहुंच जाते हैं, तो वे आरामदेह हो जाते हैं और बीज बोना बंद कर देते हैं। यह सबसे बड़ी गलतियों में से एक है। फसल कटाई एक पुरस्कार भी है और एक जिम्मेदारी भी। आपको इसे बुद्धिमत्ता से ग्रहण करना चाहिए, इसका सही प्रबंधन करना चाहिए और अगले मौसम के लिए तैयारी करनी चाहिए। विकास निरंतर होता है, मौसमी नहीं।

फसल कटाई और बुवाई के चक्र को समझना

1. कृतज्ञता और जागरूकता के साथ अपनी उपज को स्वीकार करें। आपको ईश्वर के कार्यों को पहचानना होगा। कृतज्ञता आपके हृदय को संतुलित रखती है और अहंकार को रोकती है। जब आप अपनी उपज को स्वीकार करते हैं, तो आप उसे संभालने के प्रति अधिक जागरूक हो जाते हैं।

2. सफलता के बाद आत्मसंतुष्ट न हों। आराम विकास का सबसे बड़ा शत्रु है। कई लोग परिणाम प्राप्त करने के बाद धीमे पड़ जाते हैं। इससे ठहराव आ जाता है। सफलता आपको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करनी चाहिए, रुकने के लिए नहीं।

3. हर फसल में अगली ऋतु के लिए बीज होते हैं। जो कुछ भी आपको मिलता है, वह केवल उपभोग के लिए नहीं होता; वह पुनर्निवेश के लिए भी होता है। एक बुद्धिमान व्यक्ति उपयोग के लिए और बोने के लिए अलग-अलग चीजों को अलग करता है। इससे निरंतरता सुनिश्चित होती है।

4. तैयारी ही भविष्य की फसल तय करती है। यदि आप तैयारी नहीं करेंगे, तो आपकी अगली फसल कमजोर होगी। निरंतर विकास के लिए योजना, अनुशासन और सुनियोजित कार्रवाई आवश्यक है।

5. दीर्घकालिक विकास के लिए निरंतर बीज बोना आवश्यक है। सफलता एक मौसम पर आधारित नहीं होती। यह बीज बोने और फसल काटने के बार-बार होने वाले चक्रों पर आधारित होती है। जो लोग इसे समझते हैं वे निरंतर विकास करते हैं, जबकि अन्य प्रारंभिक सफलता के बाद पतन की ओर अग्रसर होते हैं।

6. अपनी फसल का बुद्धिमानी से प्रबंधन करें। खराब प्रबंधन आपकी प्राप्त उपज को नष्ट कर सकता है। बजट बनाना, निवेश करना और योजना बनाना आवश्यक है।

7. फसल कटाई के दौरान आध्यात्मिक रूप से स्थिर रहें। यदि आप सावधान नहीं हैं, तो फसल कटाई आपका ध्यान भटका सकती है। ईश्वर में दृढ़ विश्वास बनाए रखें ताकि सफलता से आपका ध्यान न भटके या आप अहंकारी न बन जाएं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं अपनी फसल को ज्ञान और कृतज्ञता के साथ ग्रहण करता हूँ। मैं आगे भी बीज बोता रहता हूँ और आने वाले बेहतर समय के लिए तैयारी करता रहता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरी सहायता करें कि मैं अपनी फसल को बुद्धिमानी से ग्रहण करूँ और आगे आने वाली चुनौतियों के लिए तैयारी करूँ। मेरे जीवन में निरंतर विकास, अनुशासन और उद्देश्य झलकें। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



11 नवंबर

फसल कटाई के दौरान ईश्वर की दिव्य कृपा

भजन संहिता 5:12
"निश्चित रूप से, हे प्रभु, आप धर्मी लोगों को आशीष देते हैं; आप उन्हें अपनी कृपा से ढाल की तरह घेर लेते हैं।"

फसल केवल परिश्रम से ही नहीं बढ़ती; यह ईश्वरीय कृपा से संरक्षित और कई गुना बढ़ती है। कृपा ईश्वर का अलौकिक वरदान है जो आपको आपकी स्वाभाविक क्षमता से परे ले जाता है। फसल के मौसम में, कृपा आपकी प्राप्त की हुई चीजों की रक्षा करती है, आपको सही लोगों से जोड़ती है और ऐसे द्वार खोलती है जो केवल परिश्रम से नहीं खुल सकते। बहुत से लोग कड़ी मेहनत करते हैं लेकिन उनमें कृपा नहीं होती, जबकि अन्य लोग बिना किसी संघर्ष के अवसरों को प्राप्त कर लेते हैं क्योंकि कृपा उनके लिए बोलती है।

फसल कटाई में ईश्वरीय कृपा को समझना

1. कृपा आपको प्राप्त हुई चीज़ों की रक्षा करती है। कृपा के बिना, कड़ी मेहनत से अर्जित की गई चीज़ें भी उन परिस्थितियों के कारण खो सकती हैं जिन पर केवल प्रयास का कोई नियंत्रण नहीं होता। कृपा आपकी फसल को अनावश्यक नुकसान, देरी और हमलों से बचाती है जो अन्यथा केवल प्राकृतिक शक्ति से काम करने वाले व्यक्ति को पराजित कर सकते हैं। कृपा को एक वास्तविक आध्यात्मिक लाभ के रूप में पहचानना आपको इसे हल्के में लेने के बजाय इसका महत्व समझने में मदद करता है।

2. कृपा योग्यता से परे द्वार खोलती है। जीवन में ऐसे अवसर होते हैं जिन्हें केवल मेहनत या योग्यता से प्राप्त नहीं किया जा सकता, चाहे कोई व्यक्ति कितनी भी कोशिश क्यों न कर ले। कृपा आपको उन जगहों तक पहुंचाती है जहां योग्यताएं नहीं पहुंचा सकतीं, और आपको ऐसे स्थानों और रिश्तों तक ले जाती है जहां आपका रिज्यूमे आपको कभी नहीं पहुंचा सकता। बाइबल में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां इसी तरह, योग्यता के बजाय कृपा के माध्यम से प्राप्त हुईं।

3. कृपा आपको सही लोगों से जोड़ती है। सही रिश्ते आपकी सफलता को अकेले किए गए प्रयासों से कहीं अधिक तेज़ी से बढ़ा सकते हैं, यही कारण है कि ईश्वरीय संबंध इतने महत्वपूर्ण हैं। कृपा आपको ऐसे लोगों से जोड़ती है जो आपको प्रोत्साहित करते हैं, आपका समर्थन करते हैं और आपके लिए ऐसे नए आयाम खोलते हैं जहाँ आप अकेले नहीं पहुँच सकते थे। कृपा आपको उन गलत रिश्तों से भी बचा सकती है जो आपकी प्रगति को बाधित कर सकते थे।

4. कृपा संघर्ष और प्रतिरोध को कम करती है। जो चीज़ें दूसरों को वर्षों के संघर्ष के बाद भी हासिल करनी होती हैं, कृपा के सहारे वह कभी-कभी आसान और तेज़ हो जाती हैं। इसका मतलब यह नहीं है कि मेहनत करना अनावश्यक हो जाता है; इसका मतलब यह है कि कृपा उस प्रतिरोध को दूर करती है जो अन्यथा प्रगति को धीमा कर देता। कृपा प्राप्त व्यक्ति अभी भी काम करता है और मेहनत करता है, लेकिन उसके रास्ते में अनावश्यक विरोध बहुत कम होता है।

5. कृपा को पहचानना और उसका सही उपयोग करना आवश्यक है। कई लोग कृपा के दौर से गुजरते हैं, लेकिन उस समय उसे पहचान नहीं पाते, यह मानकर कि यह उनके अपने प्रयासों का ही परिणाम है। जब आप कृपा को उसके वास्तविक रूप में पहचान लेते हैं, तो आप उसे बुद्धिमानी से, कृतज्ञता के साथ, न कि हकदारी की भावना से, संभालना सीख जाते हैं। विनम्र और आभारी बने रहना आपको कृपा को निरंतर प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं ईश्वरीय कृपा में जी रहा हूँ। मेरी फसल ईश्वर की कृपा से सुरक्षित, समृद्ध और घिरी हुई है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, अपनी कृपा से मुझे घेर लें। जो कुछ भी आपने मुझे सौंपा है, उसे मेरी कृपा से सुरक्षित रखें, उसकी रक्षा करें और उसे बढ़ाएँ। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



12 नवंबर

तनाव और अवसाद से कैसे निपटें

फिलिप्पियों 4:6-7
"किसी भी बात की चिंता न करो, बल्कि हर परिस्थिति में प्रार्थना और विनती के द्वारा, धन्यवाद सहित, अपनी विनती परमेश्वर के सामने रखो।"

फसल कटाई का मौसम दबाव ला सकता है। जैसे-जैसे वृद्धि होती है, वैसे-वैसे ज़िम्मेदारी, अपेक्षाएँ और कभी-कभी भावनात्मक बोझ भी बढ़ता है। कई लोग मानते हैं कि सफलता से दबाव कम हो जाता है, लेकिन वास्तव में, विकास नई मांगों को जन्म देता है। यदि इसे ठीक से प्रबंधित न किया जाए, तो तनाव और निराशा मन को अभिभूत कर सकती है और फसल को बनाए रखने की आपकी क्षमता को कमजोर कर सकती है। ईश्वर ने कभी नहीं चाहा कि उनके लोग बोझ अकेले उठाएँ; उन्होंने एक ऐसी व्यवस्था बनाई है जहाँ उनके साथ संगति के माध्यम से शांति बनी रहती है।

तनाव और अवसाद से उबरने के तरीके को समझना

1. दबाव दुश्मन नहीं है, बल्कि इसका कुप्रबंधन दुश्मन है। विकास स्वाभाविक रूप से दबाव लाता है। समस्या दबाव में नहीं है, बल्कि उससे निपटने के तरीके में है। यदि आप सब कुछ अपने भीतर दबा लेते हैं और उसे बाहर नहीं निकालते, तो यह तनाव और अंततः भावनात्मक थकावट में बदल जाता है। आपको आध्यात्मिक सामंजस्य और व्यावहारिक संरचना के माध्यम से दबाव का प्रबंधन करना सीखना चाहिए।

2. अपने मन को सचेत रूप से नियंत्रित करें: आपका मन आपके जीवन का नियंत्रण केंद्र है। आप अपने मन में जो कुछ भी रहने देते हैं, वही आपकी भावनाओं को आकार देता है। नकारात्मक विचारों, चिंताओं और भय का तुरंत समाधान करना आवश्यक है। फसल कटाई के मौसम में आप अपने मन को अत्यधिक चिंतन में भटकने नहीं दे सकते।

3. प्रार्थना आपकी पहली प्रतिक्रिया होनी चाहिए, अंतिम विकल्प नहीं।

बहुत से लोग प्रार्थना का सहारा तभी लेते हैं जब वे अत्यधिक तनावग्रस्त हो जाते हैं। लेकिन प्रार्थना एक दैनिक अभ्यास होना चाहिए जो आपके मन को स्थिर रखे। जब आप लगातार अपनी चिंताओं को ईश्वर के सामने रखते हैं, तो आप तनाव को बढ़ने से रोकते हैं।
4. आराम एक रणनीति है, कमजोरी नहीं। थका हुआ दिमाग समझदारी भरे फैसले नहीं ले सकता। आराम करना आलस्य नहीं है; यह स्पष्टता, शक्ति और निरंतरता के लिए आवश्यक है। आराम के बिना, आप थकावट के शिकार हो सकते हैं, जिससे आपकी प्रगति बाधित हो सकती है।

5. जिन चीजों पर आपका नियंत्रण नहीं है, उन्हें अपने ऊपर हावी होने से बचाएं। तनाव अक्सर हर चीज को नियंत्रित करने की कोशिश से आता है। आपको अपनी जिम्मेदारी के दायरे में आने वाली चीजों पर ध्यान केंद्रित करना और जो आपके नियंत्रण से बाहर हैं, उन्हें छोड़ देना सीखना चाहिए।

6. स्थिरता बनाए रखने के लिए आध्यात्मिक रूप से स्थिर रहें। ईश्वर के साथ आपका संबंध ही आपका सहारा है। जब आप वचन और प्रार्थना में स्थिर रहते हैं, तो परिस्थितियाँ बदलने पर भी आपकी भावनाएँ स्थिर रहती हैं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं शांति, स्पष्टता और भावनात्मक स्थिरता के साथ जीवन व्यतीत करता हूँ। मैं दबाव को बुद्धिमत्ता से संभालता हूँ और ईश्वर में आस्था बनाए रखता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे धैर्यपूर्वक दबावों का सामना करने में सहायता कीजिए। मेरी चिंताओं को दूर कीजिए और मुझे शांति और स्पष्टता से भर दीजिए। मेरे मन और भावनाओं को शक्ति प्रदान कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



अपनी फसल का अच्छा प्रबंधन अधिक फसल आकर्षित करता है

लूका 16:10
"जिस पर थोड़ी सी बात में भरोसा किया जा सकता है, उस पर बहुत सी बात में भी भरोसा किया जा सकता है..."

फसल प्राप्त करना एक स्तर है; उसका प्रबंधन करना दूसरा। कई लोग समृद्धि का अनुभव तो करते हैं, लेकिन प्रबंधन की कमी के कारण उसे बनाए रखने में असफल रहते हैं। आपको जो मिलता है, आप उसका कैसे उपयोग करते हैं, यही निर्धारित करता है कि आगे और मिलेगा या नहीं। ईश्वर उन लोगों को अधिक समृद्धि नहीं देता जो अपने पास मौजूद संसाधनों का कुप्रबंधन करते हैं। प्रबंधन तत्परता का प्रमाण है।

प्रबंधन और वृद्धि को समझना

1. प्रबंधन ही स्थिरता निर्धारित करता है। केवल प्राप्त की गई मात्रा ही महत्वपूर्ण नहीं है; महत्वपूर्ण यह है कि आप प्राप्त की गई मात्रा को बनाए रखने, संरक्षित करने और उससे विकास करने में सक्षम हैं। उचित प्रबंधन के बिना, वृद्धि अस्थायी हो जाती है और जितनी जल्दी आती है उतनी ही जल्दी समाप्त भी हो जाती है। स्थिरता का निर्माण प्रबंधन के माध्यम से होता है, न कि केवल फसल की मात्रा से।
2. संरचना आपके संसाधनों की रक्षा करती है: बजट, योजनाएँ और प्रणालियाँ संसाधनों की बर्बादी को रोकने और उन्हें लापरवाही से खर्च होने से बचाने के लिए बनाई जाती हैं। संरचना के बिना, धन और अवसर आसानी से खो जाते हैं, भले ही शुरुआत में कितनी भी अच्छी कमाई हुई हो। जो कुछ आपको प्राप्त है, उसके आधार पर सरल प्रणालियाँ बनाना ईश्वर द्वारा दी गई देन का सम्मान करना है।

3. अनुशासन से बड़ी ज़िम्मेदारी मिलती है। जब आप अपने पास मौजूद संसाधनों के प्रबंधन में अनुशासन दिखाते हैं, तो आप यह साबित करते हैं कि आप पर अधिक ज़िम्मेदारी सौंपी जा सकती है। कई लोग अपने पास मौजूद संसाधनों के प्रति कम अनुशासन दिखाते हुए ही वेतन वृद्धि की मांग करते हैं, और यही असंगति अक्सर अगले स्तर तक पहुंचने में देरी का कारण बनती है। छोटी-छोटी बातों में भी निरंतर अनुशासन, आपको बड़ी ज़िम्मेदारी के योग्य बनाता है।

4. निरंतरता से स्थिरता आती है। अच्छे निर्णय एक बार के नहीं बल्कि लगातार दोहराए जाने चाहिए, तभी स्थायी परिणाम मिलते हैं। एक समझदारी भरा निर्णय मददगार हो सकता है, लेकिन समझदारी भरे निर्णयों को बार-बार दोहराने से ही सच्ची स्थिरता आती है। स्थिरता किसी तात्कालिकता से नहीं, बल्कि लंबे समय तक निरंतर अभ्यास से उत्पन्न होती है।

5. सिद्ध प्रबंधन से वृद्धि होती है: जब आप अपने हाथों में सौंपी गई चीज़ों का अच्छी तरह से प्रबंधन करते हैं, तो आप स्वयं को उस प्रकार के विस्तार के लिए तैयार करते हैं जो जोखिम के बजाय आत्मविश्वास से आता है। सिद्ध प्रबंधन ईश्वर को यह संदेश देता है कि आगे जो भी वृद्धि होगी, उसे जिम्मेदारी से संभाला जाएगा। यही कारण है कि प्रतिभाओं का दृष्टांत निष्ठा को अधिक अवसरों से पुरस्कृत करता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं अपने संसाधनों का प्रबंधन बुद्धिमत्ता, अनुशासन और व्यवस्थित तरीके से करता हूँ, और मेरी वृद्धि निरंतर जारी है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे अपनी फसल का बुद्धिमानी से प्रबंधन करना सिखाएँ। मेरे जीवन में संरचना और अनुशासन स्थापित करने में मेरी सहायता करें। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



क्या ईश्वर आप पर बड़े कार्यों के लिए भरोसा कर सकता है?

यूहन्ना 14:12
"जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, वह वही काम करेगा जो मैंने किए हैं, और वह इन कामों से भी कहीं अधिक महान काम करेगा..."

ईश्वर केवल आपकी इच्छाओं को ही नहीं देखता; वह यह भी देखता है कि आप पर कितना भरोसा किया जा सकता है। बहुत से लोग बड़े कार्यों, अधिक प्रभाव, अधिक फल और अधिक अवसरों के लिए प्रार्थना करते हैं, लेकिन सवाल यह है कि क्या उनका चरित्र, अनुशासन और आज्ञाकारिता उनकी प्रार्थनाओं को पूरा कर सकती है। बड़े कार्यों के लिए अधिक भरोसे की आवश्यकता होती है। यदि ईश्वर आपको अधिक जिम्मेदारी देता है, तो अधिक लोग आपकी आज्ञाकारिता, आपकी परिपक्वता और आपकी वफादारी पर निर्भर हो सकते हैं।

विश्वास और महान कार्यों को समझना

1. निष्ठा समय के साथ विश्वास का निर्माण करती है। विश्वास निरंतरता से बनता है। ईश्वर देखता है कि आप छोटे-छोटे कार्यों, निजी निर्देशों, छोटे-छोटे अवसरों और छिपी हुई जिम्मेदारियों को कैसे निभाते हैं। यदि आप जहाँ हैं वहाँ निष्ठावान रहते हैं, तो आप उस दिशा के लिए तैयार हो जाते हैं जहाँ ईश्वर आपको ले जाना चाहता है।

2. प्रतिभा से अधिक चरित्र मायने रखता है। प्रतिभा एक द्वार खोल सकती है, लेकिन चरित्र ही आपको वहाँ बनाए रखता है। महान कार्यों के लिए विनम्रता, पवित्रता, धैर्य और ईमानदारी आवश्यक है। यदि चरित्र कमजोर है, तो प्रगति भी खतरनाक हो सकती है।

3. जिम्मेदारी इच्छा के अनुरूप होनी चाहिए। बहुत से लोग प्रभाव तो चाहते हैं, लेकिन जिम्मेदारी से बचते हैं। बड़े कार्यों में दबाव, त्याग और जवाबदेही शामिल होती है। यदि आप चाहते हैं कि ईश्वर आप पर अधिक भरोसा करे, तो आपको अधिक भार उठाने के लिए तैयार रहना होगा।

4. निरंतरता तत्परता का प्रमाण है। ईश्वर केवल भावनात्मक क्षणों पर ही प्रतिक्रिया नहीं देते। वे व्यवहार के पैटर्न को देखते हैं। निरंतर प्रार्थना जीवन, निरंतर आज्ञापालन, निरंतर सेवा और निरंतर जिम्मेदारी निभाना, बड़ी जिम्मेदारियों के लिए तत्परता दर्शाते हैं।

5. महान कार्यों के लिए पवित्र आत्मा पर निर्भरता आवश्यक है। आप केवल मानवीय शक्ति से परमेश्वर का कार्य पूरा नहीं कर सकते। पवित्र आत्मा बुद्धि, शक्ति, मार्गदर्शन और धीरज प्रदान करता है। परमेश्वर जितना अधिक कार्य आपको सौंपता है, उतना ही अधिक आपको उस पर निर्भर रहना चाहिए।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं निष्ठावान, जिम्मेदार और भरोसेमंद हूँ। ईश्वर मुझ पर बड़े कार्यों का भरोसा कर सकता है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे महान कार्यों के लिए तैयार कीजिए। मेरे चरित्र का निर्माण कीजिए, मेरे अनुशासन को मजबूत कीजिए और मुझे आपके द्वारा सौंपे गए प्रत्येक कार्य में विश्वासयोग्य होना सिखाइए। मेरा जीवन आपके समक्ष भरोसेमंद हो। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



15 नवंबर

भगवान से कुछ करने की प्रार्थना करने के बजाय, उन्हें बताएं कि आप क्या करेंगे।

याकूब 2:17
"यदि आस्था के साथ कर्म न हो तो वह अपने आप में मृत है।"

आध्यात्मिक परिपक्वता का एक स्तर ऐसा होता है जहाँ आपकी प्रार्थना केवल ईश्वर से कार्य करने की विनती करने से आगे बढ़कर स्वयं को कार्य के लिए एक माध्यम के रूप में प्रस्तुत करने तक पहुँच जाती है। अनेक विश्वासी ईश्वर से सहायता भेजने की प्रार्थना करते हैं, परन्तु वे स्वयं सहायता करने को तैयार नहीं होते। वे ईश्वर से द्वार खोलने की प्रार्थना करते हैं, परन्तु तैयारी करने से इनकार करते हैं। वे ईश्वर से परिस्थितियों को बदलने की प्रार्थना करते हैं, परन्तु जो उनके हाथ में है उसकी जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं होते। विश्वास निष्क्रिय नहीं होता। विश्वास गतिशील होता है।

कर्म-आधारित आस्था को समझना

1. आस्था के लिए व्यक्तिगत उत्तरदायित्व आवश्यक है। ईश्वर ने आपको क्षमता, बुद्धि, वरदान और अवसर पहले ही प्रदान कर दिए हैं। कुछ ऐसी चीजें हैं जिनके लिए आपको ईश्वर से बार-बार प्रार्थना नहीं करनी चाहिए, क्योंकि उन्होंने आपको कार्य करने के लिए पहले ही सशक्त बना दिया है। उत्तरदायित्व आस्था की कमी नहीं है; बल्कि यह आस्था का प्रमाण है।

2. प्रार्थना से कर्म उत्पन्न होना चाहिए। प्रार्थना शक्तिशाली है, लेकिन प्रार्थना निष्क्रियता का बहाना नहीं बननी चाहिए। प्रार्थना करते समय, मार्गदर्शन को ध्यान से सुनें। मार्गदर्शन मिलने पर उसका पालन करें। सफलता उन्हीं को मिलती है जो प्रार्थना को कर्म के साथ जोड़ते हैं।

3. परमेश्वर को बताएं कि आप क्या करने को तैयार हैं। केवल यह कहने के बजाय कि, "प्रभु, कुछ कीजिए," यह कहना सीखें, "प्रभु, मेरा उपयोग कीजिए। मैं सेवा करूंगा। मैं दान दूंगा। मैं प्रचार करूंगा। मैं निर्माण करूंगा। मैं क्षमा करूंगा। मैं आज्ञा का पालन करूंगा।" इससे आप दर्शक की बजाय भागीदार बन जाते हैं।

4. परमेश्वर गतिशील लोगों के साथ कार्य करता है। पवित्रशास्त्र में, परमेश्वर अक्सर लोगों से तब मिलता है जब वे आज्ञाकारिता में आगे बढ़ रहे होते हैं। जब इस्राएल आगे बढ़ा तो लाल सागर खुल गया। जब पतरस ने कदम रखा तो वह पानी पर चला। विश्वास कर्मों के माध्यम से प्रकट होता है।

5. प्रतिबद्धता से अधिक अनुग्रह प्राप्त होता है। जब आप स्वयं को उस कार्य के प्रति समर्पित करते हैं जो परमेश्वर ने आपके सामने रखा है, तो अनुग्रह आपकी आज्ञाकारिता को फलदायी बनाने लगता है। परमेश्वर विश्वास के साथ आगे बढ़ने वालों को शक्ति प्रदान करता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं निष्क्रिय नहीं हूँ। मैं आस्था के साथ कार्य करता हूँ, जिम्मेदारी लेता हूँ और ईश्वर के उद्देश्य में भागीदार बनता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे निष्क्रिय प्रार्थनाओं के पीछे छिपने से रोकने में मेरी सहायता करें। मुझे वह शक्ति दिखाएँ जो आपने मेरे हाथों में सौंपी है, और मुझे कार्य करने का साहस प्रदान करें। मुझे अपने कार्य और अपनी फसल के लिए एक माध्यम बनाएँ। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



16 नवंबर

फसल कटाई के दौरान प्रार्थना

1 थिस्सलनीकियों 5:17
"लगातार प्रार्थना करते रहो।"

प्रार्थना केवल संघर्ष के समय के लिए ही नहीं है। फसल कटाई के समय भी प्रार्थना आवश्यक है। कई लोग सफलता मिलने से पहले पूरी लगन से प्रार्थना करते हैं, लेकिन जब फसल कटाई का समय आता है, तो वे प्रार्थना कम कर देते हैं और सफलता में खो जाते हैं। यह खतरनाक है। फसल कटाई के साथ ज़िम्मेदारी, निर्णय, दृश्यता और दबाव आता है। प्रार्थना हृदय को विनम्र, मन को शांत और फसल को सुरक्षित रखती है।

फसल कटाई के दौरान प्रार्थना को समझना

1. प्रार्थना आपको ईश्वर से जोड़े रखती है। जब समृद्धि आती है, तो आत्मविश्वास बढ़ना आसान हो जाता है। प्रार्थना आपको याद दिलाती है कि ईश्वर ही आपका सहारा है। यह आपके हृदय को समर्पित रखती है और आपके मार्ग को स्पष्ट बनाए रखती है।

2. प्रार्थना फसल को अहंकार से बचाती है। सफलता चुपचाप अहंकार पैदा कर सकती है। प्रार्थना आपको विनम्र बनाए रखती है क्योंकि यह आपको ईश्वर पर निर्भरता की ओर ले जाती है। प्रार्थनाशील व्यक्ति को याद रहता है कि फसल स्वयं नहीं उगाई जाती; यह ईश्वर की कृपा से प्राप्त होती है।

3. प्रार्थना निर्णय लेने के लिए ज्ञान प्रदान करती है। फसल के मौसम में चुनाव करने पड़ते हैं। क्या रखना चाहिए? क्या दोबारा बोना चाहिए? किसमें निवेश करना चाहिए? किस पर भरोसा करना चाहिए? प्रार्थना इन निर्णयों के लिए दिव्य ज्ञान प्रदान करती है।

4. प्रार्थना छिपे हुए खतरों को पहचानती है। हर खतरा दिखाई नहीं देता। प्रार्थना विवेक को तेज करती है ताकि आप गलत लोगों, गलत अवसरों और छिपे हुए खतरों को पहचान सकें जो आपकी फसल को प्रभावित कर सकते हैं।

5. प्रार्थना तनाव में भी शांति बनाए रखती है। दबाव बढ़ने से तनाव उत्पन्न हो सकता है। प्रार्थना तनाव को ईश्वर पर डाल देती है और आपके आंतरिक जीवन को स्थिर रखती है। प्रार्थना के बिना फसल काटना बोझिल हो सकता है, लेकिन प्रार्थना से युक्त फसल टिकाऊ बन जाती है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं अपनी फसल कटाई के दौरान प्रार्थना में लीन रहता हूँ। मेरा हृदय विनम्र है, मेरा मन शांत है, और मेरी फसल सुरक्षित है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, हर मौसम में मुझे प्रार्थनाशील बनाए रखें। फसल कटाई के समय आपको न भूलने में मेरी सहायता करें। आपने जो कुछ मेरे हाथों में सौंपा है, उसे संभालने के लिए मुझे ज्ञान, नम्रता और विवेक प्रदान करें। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



17 नवंबर

फसल कटाई के दौरान गलत लोगों से बचें

1 कुरिन्थियों 15:33
"गुमराह न हों: बुरी संगति अच्छे चरित्र को बिगाड़ देती है।"

फसल कटाई के समय लोग आते हैं। कुछ जश्न मनाने आते हैं, कुछ समर्थन देने आते हैं, लेकिन कुछ लोग फसल को निचोड़ने, ध्यान भटकाने, हेरफेर करने या नष्ट करने के लिए भी आ सकते हैं। हर किसी को आपकी फसल तक पहुंच नहीं होनी चाहिए। गलत लोग वर्षों की मेहनत से बनाई गई चीज को बर्बाद कर सकते हैं। एक समझदार विश्वासी को यह पहचानना चाहिए कि कौन करीब रहने लायक है और किससे दूरी बनाए रखनी चाहिए। सभी से प्रेम करें, लेकिन हर किसी को अपने करीब न आने दें।

फसल कटाई के दौरान गलत लोगों से दूर रहना क्यों जरूरी है, इसे समझना

1. गलत लोग संसाधनों का दोहन करते हैं। कुछ लोग निर्माण करने नहीं, उपभोग करने आते हैं। वे आपका पैसा, ऊर्जा, समय और शांति छीन सकते हैं। उदारता बुद्धिमत्ता से निर्देशित होनी चाहिए।

2. गलत लोग निर्णयों को प्रभावित करते हैं। संगति दिशा निर्धारित करती है। यदि फसल कटाई के दौरान आपके आसपास गलत लोगों का दबदबा रहता है, तो वे आपको गलत विकल्प चुनने, अनावश्यक खर्च करने, अहंकार या समझौता करने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

3. गलत लोग भ्रम पैदा कर सकते हैं। फसल काटने के लिए एकाग्रता आवश्यक है। गलत लोग अक्सर नाटक, अपमान, गपशप, ईर्ष्या और ध्यान भटकाने वाली चीजें लाते हैं। ये चीजें वृद्धि को प्रबंधित करने की आपकी क्षमता को कमजोर करती हैं।

4. पहुँच अर्जित करनी चाहिए, मान नहीं लेनी चाहिए। केवल इसलिए कि कोई आपको जानता है, इसका मतलब यह नहीं है कि उसे आप पर प्रभाव डालने का अधिकार है। आपके जीवन, संसाधनों और निर्णयों तक पहुँच विवेकपूर्ण निर्णय द्वारा नियंत्रित होनी चाहिए।

5. सही लोग फसल की रक्षा और उसे बढ़ाने में मदद करते हैं। ईश्वरीय संबंध ज्ञान, जवाबदेही, प्रोत्साहन और स्थिरता लाते हैं। फसल काटने के समय, आपको ऐसे लोगों की आवश्यकता होती है जो अच्छी तरह से प्रबंधन करने में आपकी मदद करें, न कि ऐसे लोग जो आपको पीछे खींचें।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं विवेकपूर्वक निर्णय लेता हूँ। मैं अपनी फसल को गलत प्रभावों से बचाता हूँ और अपने आस-पास बुद्धिमान, ईश्वर-भक्त लोगों को रखता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे रिश्तों में विवेक प्रदान करें। मेरे जीवन से गलत प्रभावों को दूर करें और मुझे ऐसे लोगों से जोड़ें जो मेरे उद्देश्य, ज्ञान और सफलता को मजबूत करें। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



18 नवंबर

ईश्वर के चमत्कार वास्तविक हैं

यिर्मयाह 32:27
"मैं प्रभु हूं, समस्त मानवजाति का ईश्वर हूं। क्या मेरे लिए कुछ भी असंभव है?"

विश्वासी को कभी भी ईश्वर को मानवीय सीमाओं में नहीं बांधना चाहिए। ईश्वर के चमत्कार वास्तविक हैं। वह आज भी चंगा करते हैं, प्रदान करते हैं, उद्धार करते हैं, पुनर्स्थापित करते हैं और असंभव द्वार खोलते हैं। फसल कटाई के मौसम में ऐसे क्षण आते हैं जब मानवीय प्रयास मात्र से कुछ नहीं हो सकता। तब ईश्वर हस्तक्षेप करते हैं और वह करते हैं जो कोई मनुष्य नहीं कर सकता। चमत्कार कोई कल्पना नहीं है; यह प्राकृतिक परिस्थितियों में ईश्वरीय हस्तक्षेप है।

चमत्कारों की वास्तविकता को समझना

1. ईश्वर मानवीय तर्क से परे कार्य करता है। चमत्कार वहीं से शुरू होते हैं जहाँ मानवीय क्षमता समाप्त होती है। यदि सब कुछ स्वाभाविक रूप से समझाया जा सकता है, तो आस्था की कोई सीमा नहीं रहती। ईश्वर व्यवस्था, समय, लोगों या संसाधनों से सीमित नहीं है।

2. चमत्कार आस्था और आज्ञाकारिता का परिणाम होते हैं। आस्था हृदय को ग्रहण करने के लिए तैयार करती है। आज्ञाकारिता जीवन को सहयोग करने के लिए तैयार करती है। पवित्रशास्त्र में वर्णित अनेक चमत्कार तब घटित हुए जब लोगों ने ईश्वर के निर्देशों का पालन किया।

3. फसल कटाई के दौरान चमत्कार हो सकते हैं। कभी-कभी फसल कटाई स्वयं अलौकिक साधनों से होती है। कोई दरवाजा अप्रत्याशित रूप से खुल जाता है। कोई कर्ज माफ हो जाता है। कोई रिश्ता फिर से जुड़ जाता है। कोई खाद्य सामग्री प्रकट हो जाती है। ईश्वर अपनी दिव्य कृपा से प्राकृतिक प्रक्रियाओं को बाधित कर सकता है।

4. चमत्कारों से अभिमान नहीं, कृतज्ञता बढ़नी चाहिए। जब ईश्वर कोई चमत्कार करता है, तो सही प्रतिक्रिया आराधना और कृतज्ञता है। चमत्कार आपको याद दिलाते हैं कि ईश्वर ही शक्ति का स्रोत है, न कि केवल आपकी शक्ति।

5. चमत्कार गवाही को मजबूत करते हैं और दूसरों को प्रोत्साहित करते हैं। आपका चमत्कार केवल आपके लिए नहीं है। यह एक गवाही बन जाता है जो दूसरों में विश्वास को मजबूत करता है। जब लोग देखते हैं कि ईश्वर ने क्या किया है, तो उनकी उम्मीदें बढ़ जाती हैं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं ईश्वर की चमत्कार करने की शक्ति में विश्वास रखता हूँ। मेरे जीवन में उनके लिए कुछ भी असंभव नहीं है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मैं विश्वास करता हूँ कि आपके चमत्कार वास्तविक हैं। मेरे जीवन, मेरे परिवार, मेरे काम और मेरी फसल में अपनी शक्ति प्रकट करें। मेरे विश्वास को बढ़ाएँ और मेरी गवाही आपको महिमा प्रदान करे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



19 नवंबर

राक्षस आपकी फसल के पीछे पड़े हैं

यूहन्ना 10:10
"चोर तो केवल चोरी करने, मारने और नष्ट करने आता है; मैं इसलिए आया हूँ कि उन्हें जीवन मिले, और वह भरपूर हो।"

फसल की आध्यात्मिक रूप से रक्षा करना आवश्यक है। शत्रु केवल संघर्ष के समय ही हमला नहीं करता; वह विकास के समय भी हमला करता है। फसल प्रगति, गवाही और परमेश्वर के राज्य में उपयोगिता का प्रतीक है, इसलिए यह शत्रु का निशाना बन जाती है। शैतानी प्रतिरोध भ्रम, गलत लोगों, अहंकार, अपव्यय, भय, प्रलोभन या अचानक ध्यान भटकाने वाली चीजों के रूप में आ सकता है। एक विश्वासी को आध्यात्मिक रूप से सतर्क रहना चाहिए और शत्रु को परमेश्वर द्वारा उत्पन्न की गई चीजों को चुराने से रोकना चाहिए।

अपनी फसल के विरुद्ध आध्यात्मिक विरोध को समझना

1. फसल आध्यात्मिक ध्यान आकर्षित करती है। वृद्धि अक्सर विरोध को आकर्षित करती है। जब आपका जीवन फलदायी होने लगता है, तो शत्रु उसे बाधित करने, भ्रष्ट करने या नष्ट करने के तरीके खोजता है। इसीलिए आध्यात्मिक सतर्कता आवश्यक है।

2. शत्रु सूक्ष्म प्रवेश बिंदुओं का उपयोग करता है। हर हमला नाटकीय नहीं होता। कभी-कभी यह लापरवाही से खर्च करने, अहंकार, नाराजगी, गलत संगति या प्रार्थना की उपेक्षा के माध्यम से होता है। ये छोटे-छोटे द्वार बड़े नुकसान का कारण बन सकते हैं।

3. आपको अपने मन और निर्णयों की रक्षा करनी चाहिए। शत्रु अक्सर आपकी सोच पर हमला करके फसल पर आक्रमण करता है। यदि वह आपको भयभीत, अहंकारी, भ्रमित या आवेगशील बना सकता है, तो वह आपके प्रबंधन को प्रभावित कर सकता है।

4. अनुशासन आध्यात्मिक सुरक्षा है। अनुशासित जीवन को नष्ट करना कठिन होता है। बजट बनाना, प्रार्थना करना, समझदारी भरे संबंध रखना और आत्म-नियंत्रण, ये सभी चीजें ईश्वर द्वारा प्रदत्त चीजों की रक्षा करने में सहायक होती हैं।

5. अधिकार का प्रयोग अवश्य करें। शत्रु को अपनी फसल पर हमला करते हुए निष्क्रिय रूप से न देखें। प्रार्थना करें, वचन का प्रचार करें, भय को त्यागें, गलत पहुंच को रोकें और मसीह के अधिकार में दृढ़ रहें।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मेरी फसल ईश्वर द्वारा सुरक्षित है। कोई चोर, कोई शैतान और कोई हमला उस चीज़ को नष्ट नहीं कर सकता जो प्रभु ने मुझे दी है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरी फसल को शत्रु के हर आक्रमण से बचाओ। मुझे विवेक, अनुशासन और अधिकार प्रदान करो ताकि मैं उस सब की रक्षा कर सकूँ जो तूने मेरे हाथों में सौंपा है। अंधकार की हर योजना विफल हो जाए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



20 नवंबर

उपवास सही तरीके से कैसे करें

मत्ती 6:16-18
"उपवास करते समय पाखंडियों की तरह उदास मत दिखो..."

उपवास एक शक्तिशाली आध्यात्मिक साधना है, लेकिन इसे सही ढंग से करना आवश्यक है। उपवास भूख हड़ताल, दंड या प्रदर्शन नहीं है। यह स्वयं को समर्पित करने का एक सचेत कार्य है, जिसमें विश्वासी ईश्वर को और गहराई से जानने के लिए अपनी शारीरिक इच्छाओं का त्याग करता है। फसल कटाई के मौसम में, उपवास विवेक को तेज कर सकता है, ध्यान भटकाने वाली चीजों को दूर कर सकता है, प्रार्थना को मजबूत कर सकता है और हृदय को ईश्वर की इच्छा के अनुरूप बना सकता है। लेकिन यदि उपवास गलत इरादों से किया जाए, तो यह अपना आध्यात्मिक महत्व खो देता है।

उचित उपवास को समझना

1. उपवास सही उद्देश्य से किया जाना चाहिए। यीशु ने सार्वजनिक मान्यता के लिए उपवास करने के खिलाफ चेतावनी दी थी। सही उपवास लोगों के सामने आध्यात्मिक दिखने के बारे में नहीं है। यह ईमानदारी से ईश्वर के करीब आने के बारे में है।

2. उपवास के साथ प्रार्थना अवश्य करें। प्रार्थना के बिना उपवास मात्र शारीरिक व्यायाम बन जाता है। प्रार्थना उपवास को आध्यात्मिक मार्गदर्शन प्रदान करती है। उपवास के दौरान, ईश्वर की खोज में समय व्यतीत करें, वचन पढ़ें और पवित्र आत्मा की वाणी सुनें।

3. उपवास शरीर को वश में करना सिखाता है। शरीर अक्सर आराम, सुविधा और तत्काल संतुष्टि की मांग करता है। उपवास शरीर को सिखाता है कि वह स्वामी नहीं है। इससे आत्म-नियंत्रण और आध्यात्मिक संवेदनशीलता मजबूत होती है।

4. उपवास आध्यात्मिक विवेक को तेज करता है। जब ध्यान भटकाने वाली चीजें कम हो जाती हैं, तो आपकी आत्मा अधिक एकाग्र हो जाती है। उपवास आपको निर्णयों, रिश्तों और फसल प्रबंधन के संबंध में ईश्वर की बात अधिक स्पष्ट रूप से सुनने में मदद कर सकता है।

5. विवेक के साथ उपवास करना चाहिए। उचित उपवास लापरवाही से नहीं किया जाना चाहिए। इसे समझदारी से करना चाहिए, विशेषकर यदि किसी को स्वास्थ्य संबंधी चिंताएं हों। इसका उद्देश्य आत्म-समर्पण है, शरीर को नुकसान पहुंचाना नहीं। विवेक और आध्यात्मिक अनुशासन का एक साथ उपयोग करना आवश्यक है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं विवेक, निष्ठा और आध्यात्मिक एकाग्रता के साथ उपवास करता हूँ। इससे मेरी आत्मा मजबूत होती है और ईश्वर के साथ एकाग्र हो जाती है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे उचित उपवास करना सिखाइए। मेरा उपवास सच्चा, विवेकपूर्ण और आध्यात्मिक उद्देश्य से परिपूर्ण हो। मेरी आत्मा को शक्ति दीजिए, मेरी समझ को तेज कीजिए और मुझे अपने निकट ले आइए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



ईश्वर का आशीर्वाद बनाम आशीर्वाद

नीतिवचन 10:22
"परमेश्वर का आशीर्वाद धनवान बनाता है, और वह इसके साथ कोई दुख नहीं जोड़ता।"

ईश्वर की कृपा प्राप्त करने और ईश्वर की कृपा में जीने में अंतर होता है। बहुत से लोग क्षणिक कृपाओं का अनुभव करते हैं, जैसे धन, अवसर या सफलता, लेकिन ये चीजें आती-जाती रहती हैं। वहीं, ईश्वर की कृपा एक आध्यात्मिक शक्ति है जो निरंतर वृद्धि, स्थिरता और शांति प्रदान करती है। कृपा परिणाम होती है; कृपा ही स्रोत है। जब आप केवल कृपाओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आप परिणामों के पीछे भागते हैं। जब आप कृपा में जीते हैं, तो परिणाम आपके पीछे-पीछे आते हैं।

अंतर को समझना

1. आशीर्वाद क्षणिक हो सकते हैं, लेकिन ईश्वर का आशीर्वाद स्थायी होता है। धन, पद और अवसर जैसी भौतिक चीजें परिस्थितियों के अनुसार आती-जाती रहती हैं, जो आपके नियंत्रण से परे होती हैं। लेकिन ईश्वर का आशीर्वाद निरंतरता बनाए रखता है, आपके जीवन को तब भी बनाए रखता है जब विशिष्ट आशीर्वाद क्षीण हो जाते हैं या बदल जाते हैं। निरंतरता, न कि क्षणिक वृद्धि, ईश्वर के आशीर्वाद के अधीन चलने का सच्चा प्रमाण है।

2. ईश्वर का आशीर्वाद बिना संघर्ष के फल देता है। ईश्वर का आशीर्वाद आपके दैनिक जीवन में प्रयास या परिश्रम की आवश्यकता को समाप्त नहीं करता। हालांकि, यह उस अनावश्यक दुख और अस्थिरता को दूर करता है जो अक्सर ईश्वर से अलग रहकर प्राप्त की गई समृद्धि के साथ आती है। नीतिवचन 10:22 कहता है कि प्रभु का आशीर्वाद अपने साथ कोई दुख नहीं लाता।

3. ईश्वर के बिना आशीर्वाद दबाव का कारण बन सकते हैं: जब ईश्वर में सच्ची आस्था रखे बिना वृद्धि की चाह की जाती है, तो यह चुपचाप व्यक्ति के जीवन में तनाव, भय और असंतुलन ला सकती है। कई लोग निरंतर आशीर्वादों का पीछा करते हैं, लेकिन अंततः पाते हैं कि उन्हें बनाए रखने का दबाव उन्हें प्राप्त करने के आनंद से कहीं अधिक होता है। हर लाभ को ईश्वर में स्थापित करने से आप उस छिपे हुए बोझ से सुरक्षित रहते हैं।

4. ईश्वर का आशीर्वाद आपको निरंतर विकास के लिए तैयार करता है। ईश्वर का आशीर्वाद कोई एक बार घटित होने वाली घटना नहीं है जो एक बार आकर स्मृतियों से ओझल हो जाए। यह एक निरंतर प्रवाह है, जो आपको हर मौसम में निरंतर विकास के लिए तैयार करता है। ईश्वर के आशीर्वाद के अधीन चलने का अर्थ है कि आपका विकास ईश्वर के साथ निरंतर संबंध द्वारा पोषित होता है।

5. परिणाम की नहीं, स्रोत की खोज करें: जब आप अपनी आशाओं से ऊपर ईश्वर को प्राथमिकता देते हैं, तो आशीर्वाद उस रिश्ते का स्वाभाविक परिणाम बन जाते हैं, न कि वह चीज़ जिसके लिए आप लगातार प्रयास करते रहते हैं। स्रोत की खोज का अर्थ है कि ईश्वर के प्रति आपकी लगन इस बात पर निर्भर नहीं करती कि वह वर्तमान में आपको क्या दे रहा है। यह दृष्टिकोण परिस्थितियों की परवाह किए बिना, आपके विश्वास और आपकी उन्नति दोनों को स्थिर रखता है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं ईश्वर के आशीर्वाद में चलता हूं, और मेरा जीवन शांति, स्थिरता और उन्नति को दर्शाता है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, क्षणिक परिणामों से ऊपर उठकर आपकी कृपा पाने में मेरी सहायता कीजिए। मेरा जीवन दुःख रहित होकर आपकी कृपा को प्रतिबिंबित करे। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



जब ईश्वर आपको दूसरा मौका देता है

विलापगीत 3:22-23
"प्रभु के महान प्रेम के कारण हम नष्ट नहीं हुए, क्योंकि उनकी दया कभी समाप्त नहीं होती। वे हर सुबह नई होती हैं।"

दूसरा मौका मिलना ईश्वर की दया का सबसे बड़ा प्रमाण है। बहुत से लोग अतीत की गलतियों के कारण अपराधबोध, पछतावा और शर्मिंदगी महसूस करते हैं, और सोचते हैं कि उन्हीं गलतियों ने उनकी पहचान बना दी है। लेकिन ईश्वर का तरीका ऐसा नहीं है। जब वह आपको दूसरा अवसर देते हैं, तो वह आपको आपके अतीत की याद दिलाने के लिए नहीं होता; बल्कि आपको एक नया भविष्य देने के लिए होता है। हालांकि, दूसरे मौके का सदुपयोग समझदारी से करना चाहिए, वरना वह व्यर्थ हो जाएगा।

दूसरे अवसरों को समझना

1. ईश्वर पुनर्स्थापन करते हैं, निंदा नहीं करते। ईश्वर का इरादा आपको आपके अतीत में फंसाए रखना नहीं है। उनकी दया आपको उससे बाहर निकालती है। जब वे आपको दूसरा अवसर देते हैं, तो इसका कारण यह है कि वे आपकी गलतियों से परे आपकी क्षमता देखते हैं।

2. दूसरा मौका पाने के लिए सोच में बदलाव ज़रूरी है। अगर आपकी सोच नहीं बदलेगी, तो आपके काम भी नहीं बदलेंगे। आप उसी सोच के साथ नए दौर में प्रवेश नहीं कर सकते, जिसने पिछली असफलता का कारण बनाया था।

3. पुरानी आदतों को न दोहराएं। दूसरा मौका दोहराने के लिए नहीं, बल्कि बदलाव के लिए होता है। यह पहचानें कि क्या गलत हुआ और उसे जानबूझकर सुधारें।

4. नई शुरुआत में बुद्धिमत्ता का मार्गदर्शन आवश्यक है। आपको अनुशासन, संरचना और जागरूकता के साथ अपने नए अवसर का सामना करना चाहिए। लापरवाही से वही परिणाम निकलेंगे।

5. कृतज्ञता जिम्मेदारी को मजबूत करती है। जब आप दूसरे मौके के महत्व को पहचानते हैं, तो आप उसके साथ अलग तरह से व्यवहार करते हैं। कृतज्ञता सावधानी और प्रतिबद्धता को जन्म देती है।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मुझे ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है और मैं ज्ञान के मार्ग पर चलता हूँ। मेरी नई शुरुआत स्थायी परिणाम देती है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे एक और अवसर देने के लिए धन्यवाद। मुझे बुद्धिमानी से मार्ग पर चलने में सहायता कीजिए और पिछली गलतियों को न दोहराने में मेरी मदद कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



23 नवंबर

असफलताओं से निराश मत होइए

नीतिवचन 24:16
"यद्यपि धर्मी सात बार गिरते हैं, तो भी वे फिर उठ खड़े होते हैं..."

असफलता आपकी कहानी का अंत नहीं है। बहुत से लोग निराश हो जाते हैं क्योंकि उन्हें लगता है कि एक गलती का मतलब है कि ईश्वर ने उनसे नाता तोड़ लिया है, लेकिन पवित्र शास्त्र दिखाता है कि धर्मी लोग गिर सकते हैं और फिर उठ खड़े हो सकते हैं। असफलता तभी अंतिम होती है जब आप फिर से उठने से इनकार कर देते हैं। फसल के मौसम में, आपको पिछली निराशाओं, गलत निर्णयों या विलंबित परिणामों को यह विश्वास दिलाने नहीं देना चाहिए कि आपका भविष्य समाप्त हो गया है। ईश्वर आपकी असफलताओं को भी विकास, ज्ञान और परिपक्वता के लिए सबक के रूप में उपयोग कर सकते हैं।

असफलता पर काबू पाने के तरीके को समझना

1. असफलता एक सबक है, आपकी पहचान नहीं। आपकी पहचान इस बात से नहीं बनती कि क्या गलत हुआ। आपकी पहचान इस बात से बनती है कि ईश्वर आपको क्या कहता है। एक गलती से वह क्षेत्र उजागर हो सकता है जिसमें सुधार की आवश्यकता है, लेकिन यह आपके भाग्य को रद्द नहीं करती। जब आप अपनी पहचान को अपनी असफलता से अलग कर लेते हैं, तो आपको आगे बढ़ने की शक्ति मिलती है।

2. असफलता से सुधार की आवश्यकता का पता चलता है। हर असफलता से कुछ न कुछ सीखने को मिलता है। इससे पता चलता है कि कहाँ समझदारी की कमी थी, कहाँ अनुशासन कमजोर था, या कहाँ समय सही नहीं था। शर्मिंदा होने के बजाय, यह पूछें, "मैं इससे क्या सीख सकता हूँ?" सुधार असफलता को प्रगति में बदल देता है।

3. निराशा का तुरंत सामना करें। शत्रु अक्सर असफलता का इस्तेमाल झूठ बोलने के लिए करता है, जैसे कि "तुम कभी सफल नहीं होगे" या "तुममें काबिलियत नहीं है"। इन शब्दों को अपने दिल में घर न करने दें। निराशा को मन में जगह देने से वह बढ़ती है, लेकिन सच्चाई का सामना करने से विश्वास बढ़ता है।

4. बार-बार उठ खड़े होना ताकत बढ़ाता है। हर बार जब आप किसी असफलता के बाद उठते हैं, तो आप और मजबूत होते जाते हैं। लचीलापन उबरने से ही बनता है। जो व्यक्ति गिरकर फिर से उठ खड़ा होता है, उसके पास अक्सर उस व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक ज्ञान होता है जिसने कभी परीक्षा का सामना नहीं किया होता।

5. ईश्वर खोए हुए समय और अवसरों को वापस ला सकते हैं। ईश्वर आपके अतीत से बंधे नहीं हैं। वे आपको सही राह दिखा सकते हैं, सही मार्गदर्शन दे सकते हैं और नए द्वार खोल सकते हैं। महत्वपूर्ण यह है कि आप सीखने के लिए तत्पर रहें, विनम्र रहें और निरंतर प्रयास करते रहें।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं असफलता से निराश होने से इनकार करता हूँ। मैं पहले से अधिक मजबूत, अधिक बुद्धिमान और अधिक दृढ़ निश्चयी होकर फिर से उठ खड़ा होता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे हर असफलता और बाधा से उबरने में सहायता कीजिए। मुझे वे सबक सिखाइए जो मुझे सीखने की आवश्यकता है और मेरे हृदय को आगे बढ़ने के लिए शक्ति प्रदान कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



आपके भीतर अपार क्षमता छिपी है, इसका उपयोग करें।

इफिसियों 3:20
अब उस परमेश्वर की स्तुति हो जो हमारी हर प्रार्थना और कल्पना से कहीं अधिक करने में समर्थ है, अपनी उस शक्ति के अनुसार जो हमारे भीतर कार्य करती है।

आपके भीतर जितनी क्षमता है, आपने उसका उपयोग नहीं किया है। ईश्वर ने आपके भीतर उपहार, विचार, शक्ति, बुद्धि, रचनात्मकता और योग्यता प्रदान की है। कई लोग भय, आलस्य, असुरक्षा या अनुशासनहीनता के कारण अपनी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं कर पाते। वे दूसरों की महानता की प्रशंसा करते हैं, जबकि ईश्वर ने उनके भीतर जो क्षमता दी है, उसे अनदेखा कर देते हैं। लेकिन आपकी क्षमता छिपी रहने के लिए नहीं दी गई है। यह विकसित होने, व्यक्त होने और ईश्वर की महिमा के लिए उपयोग किए जाने के लिए दी गई है।

अप्रयुक्त क्षमता को समझना

1. क्षमता इस बात का प्रमाण है कि ईश्वर ने आपमें और भी बहुत कुछ समाहित किया है। क्षमता का अर्थ है कि आपके भीतर ऐसी सामर्थ्य है जो अभी पूरी तरह से प्रकट नहीं हुई है। आप आज जो हैं, वह आपकी पूरी क्षमता नहीं है। ईश्वर ने आपके भीतर जो कुछ भी रखा है, उसी के माध्यम से कार्य करता है, लेकिन आपको विश्वास, अनुशासन और कर्म के द्वारा सहयोग करना होगा।

2. क्षमता का विकास आवश्यक है। बिना विकसित प्रतिभा कमजोर ही रह जाती है। केवल कौशल ही पर्याप्त नहीं है। आपको अध्ययन, अभ्यास, सीखना, सेवा करना और विकास करना होगा। विकास से ही कच्ची क्षमता उपयोगी प्रभाव में परिवर्तित होती है।

3. डर आपकी क्षमता को छुपाए रखता है। बहुत से लोग असफलता, आलोचना या अस्वीकृति के डर से अपनी छिपी प्रतिभा का उपयोग नहीं करते। लेकिन डर अच्छा स्वामी नहीं होता। अगर आप पूरी तरह तैयार होने का इंतजार करेंगे, तो शायद आप कभी शुरुआत ही न कर पाएं। जो आपके पास है, उसी से शुरू करें और धीरे-धीरे आगे बढ़ें।

4. कर्म से ही क्षमता प्रकट होती है। क्षमता तभी प्रकट होती है जब उसे क्रियान्वित किया जाता है। विचार तभी शक्तिशाली बनते हैं जब उनका उपयोग किया जाता है। प्रतिभा तभी प्रभावी होती है जब उनका सदुपयोग किया जाता है। सपने तभी साकार होते हैं जब कदम उठाए जाते हैं। शुरुआत करने से पहले अनुकूल परिस्थितियों की प्रतीक्षा न करें।

5. आपकी क्षमता दूसरों के लाभ से जुड़ी है। ईश्वर ने आपके भीतर जो प्रतिभा, ज्ञान, सेवा, रचनात्मकता या गवाही दी है, वह केवल आपके लिए नहीं है। किसी न किसी को आपके उपहार, ज्ञान, सेवा, रचनात्मकता या गवाही की आवश्यकता है। जब आप अपनी क्षमता का उपयोग करने से इनकार करते हैं, तो हो सकता है कि दूसरे लोग उस चीज़ से वंचित रह जाएं जो ईश्वर आपके माध्यम से प्रकट करना चाहता था।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं अपने भीतर ईश्वर द्वारा प्रदत्त क्षमता को उजागर करता हूँ। मैं साहस, अनुशासन और उद्देश्य के साथ अपनी प्रतिभा का उपयोग करता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरी सहायता कीजिए कि मैं अपने भीतर निहित आपकी क्षमता को पहचान सकूँ और उसे विकसित कर सकूँ। मेरे जीवन से भय, आलस्य और असुरक्षा को दूर कीजिए। मेरी प्रतिभाओं से आपकी महिमा के फल उत्पन्न हों। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



25 नवंबर

ईश्वर के प्रेम को याद रखें

रोमियों 8:38-39
"न तो मृत्यु, न जीवन... और न ही सृष्टि में कोई और चीज हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह में विद्यमान परमेश्वर के प्रेम से अलग कर सकेगी।"

दबाव, फसल, असफलता या अनिश्चितता के समय में, आपको याद रखना चाहिए कि ईश्वर आपसे प्रेम करता है। उनका प्रेम मौसमी नहीं है। गलतियाँ करने पर भी यह कम नहीं होता। कमजोरी महसूस करने पर भी यह घटता नहीं है। बहुत से विश्वासी ईश्वर की सेवा भय से करते हैं क्योंकि वे उनके प्रेम को नहीं समझते। लेकिन ईश्वर का प्रेम ही आत्मविश्वास, चंगाई, विश्वास और पुनर्स्थापन का आधार है। जब आप जान जाते हैं कि आपसे प्रेम किया जाता है, तो आप अनाथ की तरह जीना छोड़ देते हैं और ईश्वर की संतान की तरह जीवन जीने लगते हैं।

ईश्वर के प्रेम को समझना

1. ईश्वर का प्रेम अटल है। मानवीय प्रेम बदल सकता है, लेकिन ईश्वर का प्रेम स्थिर रहता है। आप भले ही बदलते दौर से गुजरें, लेकिन उनका प्रेम उनके साथ नहीं बदलता। यही आपके हृदय को स्थिरता प्रदान करता है।

2. ईश्वर का प्रेम कर्मों पर आधारित नहीं है। ईश्वर आपसे केवल तभी प्रेम नहीं करते जब आप अच्छा प्रदर्शन करते हैं। उनका प्रेम उनके स्वभाव में निहित है। इसका अर्थ यह नहीं है कि वे आपके हर कार्य को स्वीकार करते हैं, बल्कि इसका अर्थ यह है कि उनका सुधार प्रेम से प्रेरित होता है, अस्वीकृति से नहीं।

3. ईश्वर का प्रेम भय को दूर करता है। भय अक्सर असुरक्षा से उत्पन्न होता है। जब आप जानते हैं कि ईश्वर आपसे प्रेम करता है, तो आप भविष्य से कम भयभीत होते हैं, लोगों की राय से कम प्रभावित होते हैं और गलतियों से कम परेशान होते हैं।

4. ईश्वर का प्रेम आस्था को मजबूत करता है। जब आप जानते हैं कि कोई आपसे प्रेम करता है, तो उस पर भरोसा करना आसान हो जाता है। जब आप ईश्वर के प्रेम के प्रति आश्वस्त होते हैं, तो आपकी आस्था और भी मजबूत हो जाती है क्योंकि आप जानते हैं कि आपके प्रति उनकी मंशा अच्छी है।

5. ईश्वर का प्रेम घायल हृदय को ठीक करता है। जीवन में अस्वीकृति, विश्वासघात, निराशा और हानि जैसी कई चोटें लग सकती हैं। ईश्वर का प्रेम गहराई से घावों को भरता है। यह आपको याद दिलाता है कि आप अब भी मूल्यवान हैं, अब भी ईश्वर द्वारा चुने गए हैं और अब भी उनके द्वारा थामे हुए हैं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मुझे ईश्वर का गहरा प्रेम प्राप्त है। उनका प्रेम मुझे आत्मविश्वास, शांति और शक्ति प्रदान करता है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे प्रतिदिन आपके प्रेम को याद रखने में सहायता कीजिए। मेरे हृदय की हर असुरक्षा को दूर कीजिए और मुझे आपके प्रेम के भरोसे जीने की शक्ति दीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



अपनी फसल को बढ़ाने का लक्ष्य रखें

उत्पत्ति 26:12-13
"इसहाक ने उस भूमि में फसल बोई और उसी वर्ष सौ गुना फसल काटी, क्योंकि यहोवा ने उसे आशीष दी थी। वह व्यक्ति धनी हो गया, और उसकी संपत्ति बढ़ती ही गई, यहाँ तक कि वह अत्यंत धनी हो गया।"

फसल से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। इससे विस्तार की दृष्टि जागृत होनी चाहिए। कई लोग परिणाम प्राप्त कर लेते हैं और फिर आरामदेह स्थिति में आकर विकास करना बंद कर देते हैं। लेकिन जब परमेश्वर आपकी फसल पर आशीष देता है, तो वह आपसे अपेक्षा करता है कि आप उसका प्रबंधन करें, उसे बढ़ाएँ और उसका विस्तार करें। इसहाक ने केवल एक बार फसल नहीं काटी; उसकी संपत्ति लगातार बढ़ती रही। यह दर्शाता है कि यदि बुद्धिमानी से संभाला जाए तो फसल बड़ी वृद्धि की शुरुआत बन सकती है।

फसल के विस्तार को समझना

1. एक सफलता से संतुष्ट न हों। एक सफलता ईश्वर की क्षमताओं का पूर्ण माप नहीं है। इस उपलब्धि का जश्न मनाएं, लेकिन यहीं न रुकें। इससे आगे बढ़ने के लिए ईश्वर से ज्ञान मांगें।

2. विस्तार की शुरुआत दूरदृष्टि से होती है। आप अपनी दृष्टि से परे विस्तार नहीं कर सकते। यदि आपकी सोच संकीर्ण रहेगी, तो आपकी सफलता भी सीमित रहेगी। दूरदृष्टि आपकी क्षमता को बढ़ाती है और आपके अगले कदमों को दिशा देती है।

3. जो कुछ आपको प्राप्त हुआ है, उसे बढ़ाएँ। फसल में भविष्य के लिए बीज निहित होते हैं। यदि आप सब कुछ उपभोग कर लेंगे, तो बोने के लिए कुछ भी नहीं बचेगा। बुद्धिमान लोग उपभोग के लिए, प्रबंधन के लिए और पुनर्निवेश के लिए अलग-अलग चीजें रखते हैं।

4. विस्तार के लिए संरचना आवश्यक है। संरचना के बिना विकास भ्रम पैदा करता है। यदि आप अपनी फसल को बढ़ाना चाहते हैं, तो आपको प्रणाली, अनुशासन, योजना और जवाबदेही की आवश्यकता है।

5. ईश्वर का आशीर्वाद निरंतर विकास को बढ़ावा देता है। इसहाक की वृद्धि निरंतर होती रही क्योंकि प्रभु ने उसे आशीर्वाद दिया था। मानवीय प्रयास मायने रखते हैं, लेकिन ईश्वरीय आशीर्वाद प्रयासों को शक्ति प्रदान करता है। विस्तार की राह ईश्वर पर निर्भर रहकर ही तय करनी चाहिए।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं ज्ञान, दूरदर्शिता और अनुशासन से अपनी फसल बढ़ाता हूँ। ईश्वर के आशीर्वाद से मेरा विकास निरंतर जारी है।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मुझे वह ज्ञान दीजिए जिससे मैं आपके द्वारा मुझे सौंपी गई जिम्मेदारियों को बढ़ा सकूँ। मेरी सहायता कीजिए कि मैं व्यापक सोच रखूँ, बेहतर प्रबंधन करूँ और आपकी महिमा के लिए अपनी फसल को अनेक गुना बढ़ाऊँ। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



शैतान के झूठ पर विश्वास मत करो

यूहन्ना 8:44
"जब वह झूठ बोलता है, तो वह अपनी मातृभाषा में बोलता है,
क्योंकि वह झूठा है और झूठ का जनक है।"

शैतान का सबसे बड़ा हथियार छल है। अगर वह आपको झूठ पर विश्वास दिला दे, तो वह आपके निर्णयों, भावनाओं और भविष्य को प्रभावित कर सकता है। बहुत से लोग शक्तिहीनता से नहीं हारते; वे गलत धारणाओं से हारते हैं। वे मानते हैं कि वे योग्य नहीं हैं, सक्षम नहीं हैं, प्रेम के पात्र नहीं हैं, क्षमा के पात्र नहीं हैं, या किसी उच्च पद के लिए नहीं बने हैं। लेकिन झूठ में शक्ति तभी होती है जब उसे स्वीकार कर लिया जाता है। आपको परमेश्वर के वचन के विपरीत हर झूठ को पहचानना और अस्वीकार करना सीखना होगा।

शैतान के झूठ को समझना

1. शैतान आपकी पहचान के बारे में झूठ बोलता है। वह चाहता है कि आप यह मानें कि आप अभी भी बंधे हुए, कमजोर, ठुकराए हुए या अयोग्य हैं। लेकिन परमेश्वर कहता है कि आप मसीह में एक नई सृष्टि हैं। आपकी पहचान वचन से आनी चाहिए, न कि आरोपों से।

2. शैतान आपके भविष्य के बारे में झूठ बोलता है। वह कहता है कि कुछ नहीं बदलेगा, आपकी फसल खराब हो जाएगी और आपके सारे प्रयास व्यर्थ हो जाएंगे। लेकिन ईश्वर पुनर्स्थापक, प्रतिफलदाता और प्रतिज्ञाओं को पूरा करने वाला है। क्षणिक परिस्थितियों को अपने भविष्य को परिभाषित न करने दें।

3. शैतान डर के ज़रिए झूठ बोलता है। डर अक्सर काल्पनिक परिणामों पर आधारित होता है। दुश्मन आपको शुरुआत करने से पहले ही रोकने के लिए डर का इस्तेमाल करता है। लेकिन आस्था के लिए आपको जो दिखता है उससे परे ईश्वर पर भरोसा करना ज़रूरी है।

4. शैतान निंदा के ज़रिए झूठ बोलता है। निंदा कहती है, "तुम्हारा अंत हो गया।" दृढ़ विश्वास कहता है, "परमेश्वर के पास लौट आओ।" अंतर को समझें। पवित्र आत्मा आपको सुधारकर आपका उद्धार करता है; शत्रु आपको नष्ट करने के लिए आप पर आरोप लगाता है।

5. हर झूठ की जगह सत्य को स्थापित करना आवश्यक है। केवल झूठ की पहचान करना ही पर्याप्त नहीं है; आपको उन्हें सत्य से प्रतिस्थापित करना होगा। परमेश्वर के वचन का उच्चारण करें, उस पर मनन करें और उसे शत्रु की आवाज़ से भी अधिक प्रभावशाली बनाएं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं शत्रु के हर झूठ को नकारता हूँ। मैं अपने जीवन में परमेश्वर के वचन की सत्यता पर विश्वास करता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरे द्वारा माने गए हर झूठ को उजागर कर दीजिए। मेरे हृदय को सत्य से भर दीजिए और मुझे स्पष्टता, आत्मविश्वास और स्वतंत्रता के मार्ग पर चलने में सहायता कीजिए। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



28 नवंबर

महानता के लिए अपनी कल्पना का उपयोग करें

उत्पत्ति 11:6
"वे जो भी करने की योजना बना रहे हैं, वह उनके लिए असंभव नहीं होगा।"

कल्पना शक्ति ईश्वर का दिया हुआ एक शक्तिशाली उपहार है। यह आपको संभावनाओं को उनके स्वाभाविक रूप से प्रकट होने से पहले ही देखने की क्षमता प्रदान करती है। बहुत से लोग अपनी कल्पना शक्ति का उपयोग भय, चिंता और नकारात्मक परिणामों के लिए करते हैं, लेकिन ईश्वर चाहते हैं कि आपकी कल्पना शक्ति पवित्र हो और महानता के लिए उपयोग की जाए। आप जो कुछ भी अपने भीतर निरंतर देखते हैं, वह आपके बाहरी कार्यों को प्रभावित करता है। यदि आपकी कल्पना शक्ति सीमाओं से भरी है, तो आपके कार्य छोटे होंगे। यदि यह ईश्वर-प्रेरित दृष्टि से भरी है, तो आपका जीवन महान उपलब्धियों की ओर अग्रसर होगा।

महानता के लिए कल्पना को समझना

1. कल्पना आपको वर्तमान से परे देखने में मदद करती है। आपकी वर्तमान स्थिति आपकी अंतिम मंजिल नहीं है। कल्पना आपको वर्तमान सीमाओं से परे संभावनाओं को देखने की अनुमति देती है। यह आपके विश्वास को आगे बढ़ने का एक लक्ष्य प्रदान करती है।

2. कल्पना को ईश्वर के अनुरूप होना चाहिए। हर कल्पना ईश्वरीय नहीं होती। कुछ कल्पनाएँ अहंकार, वासना, लोभ या भय से प्रेरित होती हैं। विश्वासी को अपनी कल्पना को ईश्वर के वचन के अधीन करना चाहिए ताकि वह शुद्ध और उद्देश्यपूर्ण बनी रहे।

3. महानता का जन्म आंतरिक रूप से होता है, बाहरी रूप से प्रकट होने से पहले। किसी इमारत के निर्माण से पहले, वह किसी की कल्पना में विद्यमान होती है। किसी व्यवसाय के विकास से पहले, वह एक परिकल्पना के रूप में मौजूद होता है। किसी धार्मिक संस्था के विस्तार से पहले, वह हृदय में प्रकट होती है। कल्पना ही भविष्य की कार्रवाई को आकार देती है।

4. कल्पना शक्ति सृजनशीलता को बढ़ावा देती है। ईश्वर सृजनशील है और उसने आपको अपने स्वरूप में बनाया है। जब आपकी कल्पना शक्ति उससे प्रेरित होती है, तो विचार, समाधान और रणनीतियाँ उत्पन्न होने लगती हैं। सृजनशीलता ईश्वर के राज्य की उत्पादकता का एक अभिन्न अंग है।

5. आपको ईश्वरीय कल्पना पर अमल करना होगा। बिना कर्म के कल्पना मात्र रह जाती है। जब ईश्वर आपको कोई रूपरेखा दे दे, तो व्यावहारिक कदम उठाना शुरू करें। योजना बनाएं, सीखें, निर्माण करें और आगे बढ़ें। कल्पना दिशा देती है, लेकिन कर्म से परिणाम मिलते हैं।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मेरी कल्पना ईश्वर के वचन के अनुरूप है। मैं महानता देखता हूँ, बुद्धिमत्ता से निर्माण करता हूँ और विश्वास के साथ कार्य करता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मेरी कल्पना को पवित्र कीजिए। मुझे वह देखने में सहायता कीजिए जो आप चाहते हैं कि मैं बनाऊं, बनूं और हासिल करूं। मुझे उस दृष्टि पर कार्य करने का साहस दीजिए जो आपने मेरे हृदय में डाली है। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूं। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



29 नवंबर

शैतानी शब्दों को अस्वीकार करें

यशायाह 54:17
"तुम्हारे विरुद्ध बनाया गया कोई भी हथियार सफल नहीं होगा,
और तुम हर उस जुबान का खंडन करोगे जो तुम पर आरोप
लगाती है।"

शब्द आध्यात्मिक पात्र होते हैं। वे जीवन, मृत्यु, विश्वास, भय, आशीर्वाद या विनाश को धारण कर सकते हैं। राक्षसी शब्द अंधकार से प्रेरित होते हैं, जिनका उद्देश्य आपके जीवन को सीमित करना, हतोत्साहित करना, शाप देना, आरोप लगाना या हेरफेर करना होता है। ये शब्द लोगों, सपनों, विचारों या बार-बार दोहराई जाने वाली नकारात्मक घोषणाओं के माध्यम से आ सकते हैं। विश्वासी को अपने ऊपर बोले गए हर शब्द को स्वीकार नहीं करना चाहिए। कुछ शब्दों को अस्वीकार करना, रद्द करना और उनकी जगह परमेश्वर के सत्य को अपनाना आवश्यक है।

शैतानी शब्दों को अस्वीकार करने का तरीका समझना

1. परमेश्वर के वचन के विपरीत शब्दों को पहचानें: कोई भी शब्द जो आपके जीवन में निराशा, स्थायी विफलता, अस्वीकृति, विनाश या बंधन की घोषणा करता है, उसे पवित्रशास्त्र के अनुसार परखें। परमेश्वर का वचन ही अंतिम अधिकार है।

2. नकारात्मक कथनों को अपने भीतर न समाहित करें। कुछ लोग वर्षों पहले बोले गए शब्दों को अपने भीतर संजोए रखते हैं। वे शब्द उनके अंतर्मन में विश्वास बन जाते हैं। आपको हर उस कथन से असहमति व्यक्त करनी चाहिए जो ईश्वर के उद्देश्य के अनुरूप नहीं है।

3. अपने मुख से गलत शब्दों का खंडन करें। यशायाह कहता है कि तुम हर ज़बान का खंडन करोगे। इसका अर्थ है कि तुम्हें गलत शब्दों का उत्तर सत्य से देना होगा। कहो, "मैं इसे अस्वीकार करता हूँ। मैं धन्य हूँ। मैं प्रेम का पात्र हूँ। मुझे बुलाया गया है। मैं सुरक्षित हूँ। मैं अपने उद्देश्य को पूरा करूँगा।"

4. अपने परिवेश की रक्षा करें। उन आवाज़ों को न सुनें जो लगातार आपके ऊपर मृत्यु, भय और सीमाओं की बात करती हैं। लोगों से प्रेम करें, लेकिन अपनी आत्मा की रक्षा करें।

5. परमेश्वर के वचन का निरंतर प्रचार करें। नकारात्मक शब्दों को एक बार अस्वीकार करना पर्याप्त नहीं है। अपने आप पर, अपने परिवार पर, अपनी फसल पर और अपने भविष्य पर सकारात्मक बातें बोलने की आदत डालें।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मेरे विरुद्ध बोले गए हर शैतानी शब्द को मैं अस्वीकार करता हूँ। मैं अपने जीवन में जीवन, सत्य, आशीर्वाद और विजय की कामना करता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, मैं अपने जीवन पर बोले गए हर नकारात्मक और शैतानी शब्द को अस्वीकार करता हूँ। हे प्रभु, मेरे भाग्य, मेरी फसल और मेरे भविष्य पर आपका वचन ही अंतिम अधिकार हो। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



अपनी फसल की सुरक्षा कैसे करें

नीतिवचन 4:23
"सबसे बढ़कर, अपने दिल की रक्षा करो, क्योंकि तुम जो कुछ भी करते हो, वह उसी से निकलता है।"

फसल की रक्षा करना आवश्यक है। केवल परिणाम प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है; आपको उनकी रक्षा करना भी आना चाहिए। बहुत से लोग प्रार्थना के फल को इसलिए खो देते हैं क्योंकि वे उसकी रक्षा करने में असफल रहते हैं। अहंकार, कुप्रबंधन, गलत संगति, आध्यात्मिक उपेक्षा, बुरी आदतें या लापरवाह निर्णय फसल को नष्ट कर सकते हैं। ईश्वर ने जो कुछ भी आपको दिया है, उसका बुद्धिमानी से प्रबंधन करना चाहिए। रक्षा ही फसल को स्थायी वृद्धि में बदलती है।

अपनी फसल की सुरक्षा कैसे करें, यह समझना

1. अपने हृदय को अहंकार से बचाएँ। फसल कटाई के मौसम में लोग आत्मनिर्भर बनने के लिए प्रलोभित हो सकते हैं। अहंकार आपको ईश्वर को भुला देता है, सलाह की अवहेलना करवाता है और आपको अपनी क्षमता से अधिक आंकने पर मजबूर करता है। विनम्रता उन चीजों की रक्षा करती है जिन्हें अहंकार नष्ट कर देता है।

2. अपने मन को गलत विचारों से बचाएं। गलत विचार गलत निर्णयों की ओर ले जाते हैं। भय, लोभ, अधीरता और भ्रम आपके फल-फूल को नुकसान पहुंचा सकते हैं। अपने मन को परमेश्वर के वचन से नवप्रवर्तित रखें।

3. अपने संसाधनों का बुद्धिमानी से प्रबंधन करें। ईश्वर ने आपको जो कुछ भी सौंपा है, उसे व्यर्थ न जाने दें। बजट बनाएं, योजना बनाएं, बचत करें, निवेश करें और सावधानीपूर्वक उसका प्रबंधन करें। कुप्रबंधन एक बड़ी फसल को भी नष्ट कर सकता है।

4. अपने रिश्तों और परिवेश की रक्षा करें। गलत लोग आपकी समृद्धि को छीन सकते हैं। अपने आस-पास ऐसे लोगों को रखें जो ज्ञान, जवाबदेही, प्रोत्साहन और विकास प्रदान करें। हर किसी को आपकी तरक्की का हक नहीं होना चाहिए।

5. आध्यात्मिक रूप से मजबूत रहें। फसल कटाई का समय आने पर प्रार्थना कम न करें। फसल कटाई के लिए सुरक्षा की आवश्यकता होती है। बाइबल में बने रहें, प्रार्थना करते रहें और अपनी विवेकशीलता को तेज रखें।

6. अगली ऋतु के लिए बुवाई जारी रखें। सुरक्षित फसल न केवल आज के लिए भोजन प्रदान करती है, बल्कि आने वाले कल के लिए भी तैयारी करती है। भविष्य में विकास के लिए बीज बचाकर रखें। बुद्धिमान लोग प्राप्त होने वाली हर चीज का उपभोग नहीं करते।

समापन प्रार्थना

दैनिक स्वीकारोक्ति

मैं अपनी फसल की रक्षा विनम्रता, बुद्धिमत्ता, अनुशासन और आध्यात्मिक शक्ति से करता हूँ।

प्रार्थना

हे स्वर्गिक पिता, जो कुछ आपने मुझे सौंपा है, उसकी रक्षा करने में मेरी सहायता कीजिए। मुझे विनम्र, अनुशासित और आध्यात्मिक रूप से जागरूक रखिए। मेरी फसल स्थायी वृद्धि और भविष्य के बीज में तब्दील हो। यीशु के नाम में, मैं प्रार्थना करता हूँ। आमीन।

"कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल"



हमारे मंत्रालय के बारे में



हमारे लोगो में बाज
स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल में, ईगल हमारे मंत्रालय के दृष्टिकोण और भविष्यसूचक अंतर्दृष्टि का प्रतिनिधित्व करता है।

स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल में, हमारा मिशन परमेश्वर के राज्य को पूरी लगन और निडरता से आगे बढ़ाना और यीशु मसीह के लिए दुनिया को जीतना है। अटूट विश्वास के साथ, हम सुसमाचार की परिवर्तनकारी शक्ति से दिलों को प्रज्वलित करने का प्रयास करते हैं, व्यक्तियों को उनके ईश्वर प्रदत्त उद्देश्य पर चलने के लिए सशक्त बनाते हैं, और समुदायों को प्रेम और करुणा का पात्र बनने के लिए प्रेरित करते हैं। उत्कृष्टता की निरंतर खोज, प्रार्थनापूर्ण मध्यस्थता और सत्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के माध्यम से, हम शिष्य बनाने, जीवन को रूपांतरित करने और एक वैश्विक पुनरुत्थान लाने के लिए समर्पित हैं जो यीशु के नाम को महिमा प्रदान करता है।

हमारा उद्देश्य यीशु मसीह के प्रेम और शक्ति से पूर्णतः परिवर्तित संसार देखना है। हम ऐसे राष्ट्रों की कल्पना करते हैं जो आराधना में एकजुट हों, जहाँ प्रत्येक हृदय उनकी उपस्थिति की अग्नि से प्रज्वलित हो। रणनीतिक साझेदारियों, प्रभावशाली प्रचार-प्रसार पहलों और गतिशील शिष्यत्व कार्यक्रमों के माध्यम से, हमारा लक्ष्य निडर और उत्साही विश्वासियों की एक पीढ़ी तैयार करना है जो आशा, प्रेम और उद्धार का संदेश निडरता से पृथ्वी के कोने-कोने तक पहुँचाएँ। हम समुदायों के पुनरुद्धार, परिवारों के पुनर्स्थापन और जीवन में शाश्वत परिवर्तन की कल्पना करते हैं, क्योंकि हम यीशु मसीह के लिए विश्व को जीत रहे हैं, एक-एक आत्मा का उद्धार कर रहे हैं।

• स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल •

« अग्रदूत »

हमारा नज़रिया

हम स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल को दुनिया के लिए एक उज्ज्वल गवाही के रूप में देखते हैं: एक ऐसा समुदाय जिसमें चमत्कार, अद्भुत कार्य और चंगाई रोजमर्रा की संस्कृति का हिस्सा हों। ताकि मसीह का असीम प्रेम और शक्ति पृथ्वी के हर कोने में लोगों के जीवन को स्पर्श करे। जो भी हमसे मिले, वह यह जानकर जाए कि यीशु जीवित हैं, सक्रिय हैं और लौट रहे हैं। कृतज्ञता और प्रेम से भरे भाव से, हम विजेताओं से भी बढ़कर आगे बढ़ते हैं, मसीह को प्रकट करते हैं, जीवन बदलते हैं और उनके राज्य को पृथ्वी के कोने-कोने तक फैलाते हैं।

हमारे आदर्श वाक्य

कृतज्ञता और प्रेम में हम विजेताओं से भी बढ़कर हैं। स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल

हमारा विशेष कार्य

हर पल मसीह को जीना, न कि केवल रविवार को, बल्कि अपने दैनिक जीवन में उनकी उपस्थिति को समाहित करके। हम उनकी शक्ति, प्रेम और चंगाई में चलते हैं; हम विश्वास में आगे बढ़ते हैं क्योंकि हम जानते हैं कि यीशु जीवित हैं। उनके साथ संबंध में, केवल नियमों से बंधे नहीं, हम एक ऐसे ईसाई धर्म को साझा करते हैं जो वास्तविक, जीवंत और परिवर्तनकारी है।

बैंक विवरण

बीएसबी: 085-928 | खाता संख्या: 50-448-4459

“सीमाओं से परे चर्च”

लोगो का विश्लेषण

गोलाकार आग
चील के चारों ओर फैली गोलाकार आग पृथ्वी का प्रतीक है, जो सेवकाई के माध्यम से ईश्वर के कार्य की विश्वव्यापी पहुंच को दर्शाती है।

ईगल
बाज भविष्यसूचक सेवकाई का एक शक्तिशाली प्रतीक है, जो दूरदृष्टि, शक्ति और दिव्य अधिकार का प्रतीक है।



लपटें
ये ज्वालाएँ ईश्वर की आत्मा का प्रतीक हैं, जो तेज़ी से जलती हुई राष्ट्रों में फैलती हैं, प्रकाश और परिवर्तन लाती हैं।

“
स्पिरिट फ्लेम्स ग्लोबल” हमारे मंत्रालय का नाम है

ईगल – मंत्रालय का प्रतीक

2021 में, परमेश्वर के सेवक को सेवकाई के एक बाज की तरह ऊँची उड़ान भरने, भविष्यवाणी के क्षेत्र में और ऊँचाई पर पहुँचने और आत्मा की प्रेरणा के साथ आगे बढ़ने का एक गहरा दर्शन प्राप्त हुआ।